सत्यापन क्रमांक :
RAJHIN/2015/60530

ओ३म्

महर्षि दयानन्द स्मृति प्रकाश

हिन्दी मासिक

वर्ष : ४ अंक : १२ १ दिसम्बर २०१८ जोधपुर (राज.) पृ.:३६ मूल्य १५० ₹ वार्षिक

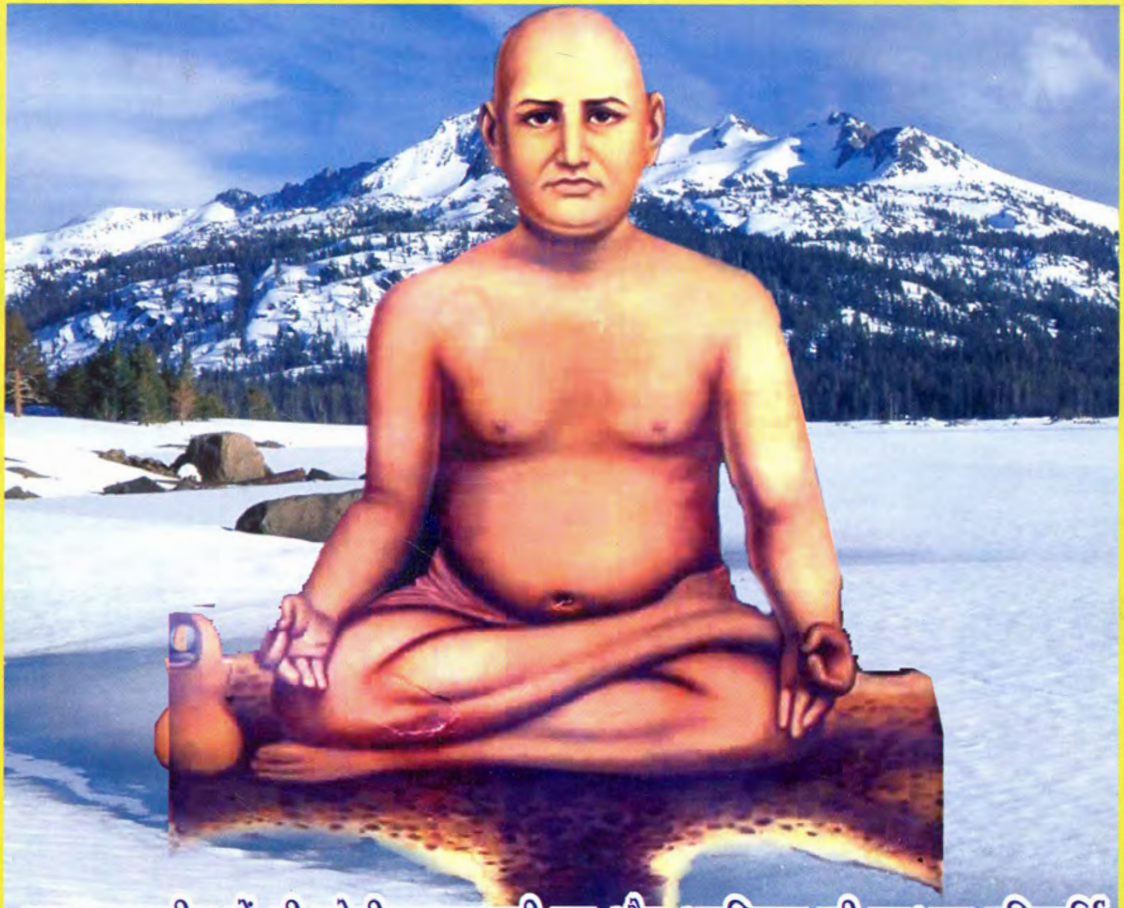

भयानक शीत में भी कोपीनमात्रधारी तप और अपरिग्रह की साक्षात् प्रतिमूर्ति

एकस्मिन्नेवसर्वे महर्षि दयानन्द सरस्वती

महर्षि दयानन्द स्मृति भवन में आयोजित महर्षि बलिदान दिवस व शारदीयनवसस्येष्टि पर्व की झलकियाँ

श्री वेदप्रियजी शास्त्री के जोधपुर प्रवास पर १७ नवम्बर को महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन में सांयकालीन यज्ञोपरान्त आचार्य सत्यानन्द जी वेदवागीश जी व्याख्यान करते हुए।

श्री वेदप्रियजी शास्त्री के जोधपुर प्रवास पर १८ नवम्बर को नगर आर्यसमाज गुलाबसागर में साप्ताहिक यज्ञ की झलकियाँ एवं व्याख्यान करते आचार्य श्री

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् । -ऋग्वेद ९।६३।५

सबको श्रेष्ठ बनाओ

महर्षि दयानन्द स्मृति प्रकाश का मुख्य प्रयोजन

महर्षि दयानन्द सरस्वती के व्यक्तित्व, कृतित्व, व उनके द्वारा लिखित समस्त साहित्य तथा उनके सार्वभौमिक अद्वितीय कार्यों व सिद्धांतों का प्रचार-प्रसार, स्थापना व व्यवहार में साकार करने के लिये कार्य करना ।

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास, जोधपुर का मुखपत्र

महर्षि दयानन्द स्मृति प्रकाश

वर्ष : ४ अंक : १२

दयानन्दाब्द : -१९५

विक्रम संवत् : मार्गशीर्ष २०७५

कलि संवत् ५११९

सृष्टि संवत् :१,९६,०८,५३,११९

मार्गदर्शक

पं. सत्यानन्दजी वेदवागीश,

सम्पादक मण्डल :

प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु, अबोहर

डॉ. सुरेन्द्रकुमार, हरिद्वार

डॉ. वेदपालजी, मेरठ

पं. रामनारायण शास्त्री, सिरोही

आचार्या सूर्यादेवी चतुर्वेदा

कार्यवाहक सम्पादक :

कमल किशोर आर्य

Email: sampadakmdsprakash@gmail.com

9460649055

प्रकाशक : 0291-2516655

महर्षि दयानन्द सरस्वती

स्मृति भवन न्यास, जसवन्त कॉलेज

के पास, जोधपुर ३४२००१

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है । किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्याय क्षेत्र जोधपुर ही होगा ।

Web.-www.dayanadsmritinyas.org.

वार्षिक शुल्क :१५० रुपये

आजीवन शुल्क : ११०० रुपये

(१५वर्ष)

अनुक्रमणिका

	क्या	कहाँ
१.	सम्पादकीय....	४
२.	ईश्वर स्तुति.....	१०
३.	महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास.....	१०
४.	वेदवचन.....	११
५.	सोम प्रभु की महिमा.....	१३
६.	ऋषिगाथा.....	१४
७.	दयानन्द कौन है ?.....	१६
८.	वैदिक धर्म और वर्तमान आर्यसमाजी....	२१
९.	आर्यसमाज का इतिहास....	२५
१०	महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास चुनाव	२९
११.	विद्यालयों में वैदिक धर्म प्रचार.....	३१
१२.	शारदीयनवसस्येष्टि पर्व एवं महर्षि बलिदान दिवस	३२
१३.	गोपाष्टमी का आयोजन....	३२
१४.	आचार्य जी वेदप्रियजी शास्त्री का जोधपुर प्रवास..	३२
१५.	सामुहिक विवाह सम्पन्न....	३३
१६.	स्वामी वेदात्मवेशजी का जोधपुर प्रवास	३४

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास

बैंक ऑफ बडौदा खाता संख्या-01360100028646

IFSC BARB0JODHPU

यह पांचवा अक्षर जीरो है

संपादकीय

महर्षि दयानंद स्मृति प्रकाश का यह अंक आपके हाथ में पहुंचने तक राजस्थान सहित पॉच राज्यों में मतदान पूर्ण हो चुका होगा एवं परिणाम आने ही वाले होंगे। सम्पादकीय लिखते लिखते पूर्वानुमान आ रहे हैं, जिनके अनुसार राजस्थान में कांग्रेस की सरकार बन रही है। शेष राज्यों में भी भाजपा की स्थिति कमजोर ही होती जा रही है। भारत को कांग्रेसशून्य बनाने को निकली भाजपा को विधानसभा और संसदीय चुनावों में प्रचण्ड बहुमत देने वाली राजस्थानी जनता का मोहभंग क्यों हुआ? जनता मूर्ख है या शासन? राजनैतिक दल कभी प्रत्यक्ष रूप में जनता को मूर्ख नहीं कह सकते। हॉ! अपनी गलती नहीं मानते हुए विपक्षी दल पर जनता को बरगलाने का आरोप थोप देते हैं। यह अलग बात है कि समझदार को तो बरगलाया भी नहीं जा सकता। अतः पक्ष और विपक्ष दोनों की दृष्टि में जनता मूर्ख ही होती है, भले ही वे ऐसा प्रत्यक्ष रूप से नहीं कह सकते। इसीलिए तो भारत लुटता है और नेता अफसर समृद्ध ही होते हैं। खैर हम निरपेक्ष दृष्टि से विचार का प्रयास करेंगे। चुनावों में जब जब भारत में चुनाव होते हैं, बहुत से मुद्दे या प्रश्न खड़े कर जाते हैं। नियमित पाठकों को स्मरण होगा, लगभग डेढ़ वर्ष पहले पॉच राज्यों में हुए चुनाव पर लिखे गए संपादकीय में इनमें से कुछ का उल्लेख किया भी गया था। कुछ बातें पुनरावृत्ति से स्मृति में बनी रहती है:

१. भारत में राजनीति जनसेवा, समाज कल्याण, देश के विकास, षि के कल्याण व जन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए नहीं होती।

२. राजनीति में सिर्फ पैसे का बोलबाला होता है जो यह प्रमाणित करता है कि राजनीति व्यवसाय बन गई है, जिसमें राजसत्ता के माध्यम से धन की बढ़ोतरी ही राजनीतिज्ञों का उद्देश्य होता है। उस राजनेता का नाम स्मरण करने का प्रयास कीजिए कि राजनीति आरंभ करने के बाद उसकी संपत्ति में कमी आई हो। याद आए तो मुझे भी बताइयेगा।

३. चुनावी मौसम छोड़कर आप किसी उम्मीदवार के पास जाइए और आर्थिक मदद मांगिए! नहीं देंगे! आम दिनों में छोड़िए, विपदा में भी रामरसौड़ा नहीं खोलने वाले ये लोग चुनाव में अथाह खर्च क्यों कर देते हैं ? किसी चुनाव में उम्मीदवारों के व्यय पर चुनावआयोग की नहीं, अपनी दृष्टि रखकर व्यय का अनुमान कीजिए। क्या वह उस खर्चे की प्रतिपूर्ति नहीं करेंगे?किस माध्यम से? ये लोग जनता की राशि व्यय करते समय पूरा ध्यान रखते हैं यह राशि स्थाई कार्यों में नहीं लगे, वरन अस्थाई कार्यों में लगे और जो कार्य करवाया जाए वह शीघ्र से शीघ्र पुनः हो। ताकि अधिकतम खर्च से अधिकतम कमाई हो सके। जब सरकार के काम गिनाने की बारी आती है तो सरकारें सबसे पहले काम पर व्यय की गई राशि गिनाती हैं। कई योजनाएं या कार्य ऐसे होते हैं जिनके लिए धन आवंटित किया जाता है किंतु वह धन उस कार्य पर नियत अफसर, कार्यालय,यातायात के साधन,

ऑफिस मशीनरी आदि पर ही खर्च हो जाता है। काम आगे बढ़ता ही नहीं है। नेता भी खुश! अफसर भी खुश! भाड़ में जाए जनता!

४. व्यय में जन कल्याण, सुरक्षा, विकास आदि के लेबल इसलिए लगते हैं, कि बिना इन लेबलों के व्यय और परिणामस्वरूप कमाई संभव नहीं है।

५. सत्ता में बैठकर कमाई का काम (जिसे कमीशनखोरी कहते हैं) धन को व्यय करने से ही हो सकता है। इसलिए राजनेता एवं अफसर अधिकतम व्यय करने का प्रयास करते हैं। किन्तु इस अधिकतम व्यय के लिए अधिकतम आय भी आवश्यक है। वह कैसे?

६. आय बढ़ाने के लिए जनता को करों के बोझ से दबाया जाता है। देश का कर ढांचा देखकर टीवी सीरियल चाणक्य में ब्रह्मचारी विष्णु का आचार्य शकटार से संवाद याद आता है जिसमें विष्णु कहता है कि राजा को प्रजा से कर उसी प्रकार लेना चाहिए जिस प्रकार मधुमक्खी फूलों को बिना कष्ट पहुंचाए उनसे मधु एकत्र करती है।

७. सत्ता में धन प्राप्ति ही लक्ष्य होने के कारण कोई भी पार्टी आम जनता को करों में छूट देने को तैयार नहीं है। उल्टे किसी न किसी बहाने करो में निरंतर बढ़ोतरी ही होती है, नए–नए प्रकार के कर लगाए जाते हैं और आय बढ़ाने हेतु नई–नई कर प्रणालियां लागू होती हैं, जिससे जनता निरंतर पीड़ित होती है।

८. क्या ऐसा नहीं हो सकता कि चुनाव सिर्फ वार्ड पंच और पार्षदों का हो । फिर ग्राम, नगर, जिले, राज्य और राष्ट्र स्तर तक पिरामिड (शंकु) के रूप में सभाओं का गठन और सभापतियों का चयन होता जाय ? जिस चयनित प्रतिनिधि का जितने क्षेत्र के हितसाधन का सामर्थ्य होगा, वह उसका सभासद या सभापति बन सकेगा। बहुत अपव्यय भी रुकेगा।

९. देश के चुनावों में साम्प्रदायिकता और हिंदू समाज के जातिवाद का कोढ़ भयानक रूप से उभर कर सामने आता है, जिसकी खुजलाहट अगले चुनाव तक मिट ही नहीं पाती। पता नहीं कब हिन्दू समझेगा कि हिंदुत्व के नाम पर इस समाज में न रोटी का संबंध होता है, ना बेटी का और ना राजनीति का। हर बार की तरह इन चुनावों में भी हिंदुत्व के नाम पर नहीं, जाति के नाम पर प्रतिनिधित्व बहुत उभर कर आया। ब्राह्मणों ने दोनों बड़े राष्ट्रीय दलों से पर्याप्त टिकटों की मांग की। यह मांग ब्राह्मणों ने भी की, राजपूतों ने भी, अग्रवालों ने भी की और पता नहीं किन–किन जातियों ने अपनी बैठकों में राजनीतिक दलों के नेतृत्व को आमंत्रित कर अपना बल दिखाया होगा. इसपर विस्तृत विचार अंत में!

१०. सत्तारूढ़ दल बड़े जोर शोर से अपने को हिंदुओं का हिमायती कहते हुए देश पर ६० साल राज करने वाले दूसरे दल को हिंदुओं का विरोधी बता रहा है। यह कोई कम आश्चर्य की बात नहीं है कि जिस दल को हिंदू विरोधी बताया जाता है वह दल भी विधानसभा क्षेत्रों में अपना उम्मीदवार तय करने के लिए हिंदुओं के जातिवादी समीकरणों का सहारा लेता है, उस दल में भी अस्सी प्रतिशत लोग हिंदू ही है। किंतु फिर भी वह हिंदू

विरोधी दल के रूप में सारे देश में यदि माना जाता है, तो यह हिंदुओं को ही प्रश्नगत करता है। हिंदू किसी भी दिल में रहे कम से कम हिंदू हितेषी हो! जिस दल में अस्सी प्रतिशत हिंदू हो, वह दल हिंदू विरोधी कैसे रहा और कैसे हो सकता है?यह ठीक वैसी ही बात है जैसी महाभारत काल में के बाद इस देश में देखने को मिलती थी कि मुट्ठी भर विदेशी आते यहाँ के नायको एवं राजाओं को अपने अधीन बड़ा पद देते और उनके भुजबल के आश्रय सारे देश पर राज्य करते रहे। अर्थात् हिन्दू अपने हित से अनजान है। या स्वार्थ के लिए समाज व राष्ट्र का बलिदान दे देने वाला नासमझ है।

११. समाज व राष्ट्र का जाने अनजाने अहित करने वाला हिंदू हिन्दू सामाजिक परिवेश की ही देन है। भले ही भाजपा स्वयं को हिंदू हितैषी कहे, किंतु इस दल में भी उसी परिवेश से निकले लोग हैं। इसीलिए वे अपना टिकट कटते ही संगठन को लात मारकर विद्रोह पर उतारू होते दिखाई देते हैं। फिर भाजपा का वोटबैंक बनने बिगड़ने का कारण क्या है?

१२. इतिहास में नहीं जाता हुआ मैं सीधे कहता हूँ कि स्वामी श्रद्धानन्द के रूप में उद्धारक को ठुकराकर, अन्य कांग्रेसियों के सत्तालोलुप न होने, गाँधीजी की इच्छाओं की दास बन, गाँधी नेहरू परिवार की जेबी संस्था बन चुकी कांग्रेस की हिन्दूविरोधी और तुष्टीकरण की नीति के विरोध को भुनाकर भाजपा हिन्दूहित नामी नौका पर सवार हो सुनाव सागर तर गई। भाजपा और संघ परिवार को अभिन्न मानते हुए यह कह सकते हैं कि संघ परिवार ने भारत की प्रथम प्रजातांत्रिक संस्था आर्यसमाज को प्रयोगशाला बना यह देख लिया कि सत्ता गुणों की नहीं, संख्या की चेली है। संघ इसी मार्ग पर चल पड़ा।

१३. संघ ने राष्ट्र और समाज के प्रत्येक घटक को अपना घटक बनाया। ये घटक सरकारी नौकरों का संवर्ग भी है, जन्मना जातियों के पंच पंचायतें भी, ट्रेड यूनियने भी, साहित्यकार, दार्शनिक आदि बौद्धिक वर्ग भी, और डॉक्टर, इंजीनियर आदि व्यावसायिक संवर्ग भी। इन सबको एक बड़ें संगठन के आधार का झुनझुना पकड़ाया और सभी उसी बयार में बह चले। संघ बहुत बड़ा संगठन बन गया। सम्पर्क और स्वार्थपूर्ति का सातत्य रहा। इसका खुलासा यहाँ अभीष्ट नहीं है। संभवत इसी कारण सत्ता और संगठन के विस्तार से सत्ता पाने के लक्ष्य से ये लोग कुरीतियों और अंधविश्वासों को पूर्ण आश्रय देते हुए हिंदुओं को गारत करने वाले सभी कारकों को भी प्रश्रय देते हुए बढ़ते चले गए व सत्ता तक पहुँचे।

१४. अब प्रश्न उठता है कि संगठन स्थायी है तो सत्ता भी स्थायी रहनी चाहिए। फिर वोटों में कमी क्यों? इसका कारण यह है कि सुविकसित संघ परिवार अनेकता में एकता का उदाहरण है। इस संगठन ने मात्र हिन्दुत्व के नाम पर सब को एक किया है, जबकि हिन्दुओं में हिन्दुत्व के नाम पर रोटी बेटी जैसे सामान्य व्यवहार भी नहीं होते। समरसता का संदेश संघ कई बार देता है। किन्तु वह व्यावहार में नहीं आता। महाभारत काल के बाद के हिन्दू बने समाज में संघ के हस्तक्षेप से मात्र इतना अंतर आया है कि इसके

माध्यम से सम्प्रेषण का विस्तार हुआ है और वह सुधारों से दूर हुआ है। बिना मूलभूत कारकों के सुधरे व्यावहारिक सुधार संभव ही नहीं है। संघ परिवार के जिस वर्ग ने राजनीति का मोर्चा सम्हाला, वह स्वार्थी भी है। उनकी अपनी कार्यसूची भी है और संघ सर्वमान्य सूची दे सकने में असमर्थ है। हिन्दुओं का हित किसमें है?राजनीतिज्ञ उसके लिए क्या करे? सबरीमाला में भजपा ने किसका हित साधा?आरक्षण के कारणों को मिटाए बिना संघ सवर्णों का साथ लेगा तो दलित टूटेंगे। आर्थिक आधार को कारण बनाएंगे तो धर्मान्तरण भी बढ़ेगा और अन्य लोग भी आरक्षण का लाभ बिना पात्र हुए भी लेंगे। राम मन्दिर ही नहीं लाखों दूसरे मन्दिर बन जाने पर भी क्या हिन्दुओं का भला होगा?जिस दिन हिन्दुओं के पतन के कारणों को हटाने संघ दयानन्द के मार्ग पर आएगा, उस दिन संघ पतन के कारकों को बनाए रखकर स्वार्थ सिद्ध करने वालों को स्वीकार्य नहीं रह जाएगा। और वर्णसंघर्ष होगा ही। अतः सत्ता पाने के बाद भी किंकर्त्तव्यविमूढ़ संघ सबके विकास के मुद्दे पर ही कायम है, मुस्लिम विंग का नया जुमला और खोला। ये बातें सामान्य हिन्दू की समझ से परे है। पॉच साल के लिए दिवास्वप्नपूर्ति का आश्वासन दे सत्ता में आई भाजपा अपनी असफलता पर स्पष्टीकरण तो नहीं दे पाती, उलटे उलाहना देती है कि कांगेस से ६० साल में जो नहीं हुआ वह हमसे पॉच वर्ष में कैसे मांग सकते हो! जनता सतर्क हो गई। सत्ता का जहरीला स्वाद ही ऐसा है। चाहे भाजपा हो या कांग्रेस। यही कारण तो नहीं वोट घटने का?

अस्तु अब हम उपर्युक्त बिन्दु ६ पर पुनः आते हैं। मैं स्वामी वेदानन्दजी महाराज का कथन फिर दोहराता हूँ कि समाज में अज्ञान का लाभ उठाने वाला राक्षस होता है और विष पीकर भी समाज के कल्याण की बात करने वाला ऋषि होता है। राजनैतिक माहौल में विष घोलते जन्मना जातिवाद का जहर मिटाने का काम महर्षि की शरण में ही हो सकता है। अन्यथा अपने मतों को, अपने संप्रदाय के हित में एकत्रीकरण कर, विदेशी मत – संप्रदाय सत्ता से सुविधा और संरक्षण पा इस देश और धर्म का अहित करते रहेंगे।

पहले राजनैतिक सुधार! कुत्सित राजनीति का हल जब हम दयानंद के दर्शन में ढूंढते हैं तो हमारे मार्गदर्शक महर्षि दयानन्द की सत्यार्थ प्रकाश का छठवां समुल्लास सामने आता है। छठे समुल्लास को मनुस्मृति के एक श्लोक से आरंभ कर वेदों एवं ब्राह्मण ग्रंथों से कुछेक उद्धरण देते हुए पूरे छठे समुल्लास में महर्षि दयानंद सरस्वती ने कुल मिलाकर १६० श्लोक मनुस्मृति से उद्धृत कर राजधर्म बिषयक अध्याय में किसी राज्य के लिए आवश्यक सारी व्यवस्था को रेखांकित किया है। किन्तु हमारे धर्म के स्वयंभू झंण्डाबरदारों ने अपने स्वार्थ के लिए मनुस्मृति में भी प्रक्षेप कर उसे ऐसा बना दिया है कि मनुस्मृति के प्रक्षिप्त श्लोकों को आधार बनाकर सदियों से दलितों एवं नारियों पर अत्याचार करने वाला वर्ग भी क्या विशुद्ध मनुस्मृति को स्वीकारेगा?और प्रक्षिप्त मनुस्मृति के आधार पर सदियों से अत्याचार सहने वाला वर्ग प्रक्षिप्त मनूस्मृति को स्वीकारेगा?पीड़ित

वर्ग तो प्रत्येक २५ दिसम्बर को मनुस्मृति दहन दिवस मनाता है।

यद्यपि आर्य समाज बहुत प्रयास कर रहा है मनुस्मृति को पुनः स्थापित करने के लिए। किंतु स्वयं को हिंदुओं का झंडाबरदार कहने वाले लोग– जिन्होनें अपने ही भाइयों पर अत्याचार करते हुए बहुत लाभ सहस्राब्दियों तक कमाया है– इसमें सहयोग नहीं करते और न ही दलित लोग कुछ सुनने को तैयार है। किन्तु समाधान तो करना ही होगा।

सत्यार्थ प्रकाश के तीसरे समुल्लास में स्त्री और शूद्रों के वेद अध्ययन के विषय में प्रश्न उत्तर रूप में महर्षि दयानन्द जी सरस्वती लिखते हैं: –

स्त्रीशूद्रौ नाधीयातामिति श्रुतेः। स्त्री और शूद्र न पढ़ें यह श्रुति है।

(उत्तर) सब स्त्री और पुरुष अर्थात् मनुष्यमात्र को पढ़ने का अधिकार है। **तुम कुआ में पड़ो और यह श्रुति तुम्हारी कपोलकल्पना से हुई है।** किसी प्रामाणिक ग्रन्थ की नहीं। और सब मनुष्यों के वेदादि शास्त्र पढ़ने सुनने के अधिकार का प्रमाण यजुर्वेद के छब्बीसवें अध्याय में दूसरा मन्त्र है–

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः।
ब्रह्मराजन्याभ्या शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय ।।

परमेश्वर कहता है कि (यथा) जैसे मैं (जनेभ्यः) सब मनुष्यों के लिये (इमाम्) इस (कल्याणीम्) कल्याण अर्थात् संसार और मुक्ति के सुख देनेहारी (वाचम्) ऋग्वेदादि चारों वेदों की वाणी का (आ वदानि) उपदेश करता हूं वैसे तुम भी किया करो।

आगे चौथे समुल्लास में जन्म से जाति व्यवस्था को गलत बताते हुए एवं कर्म से जाति व्यवस्था की स्थापना दर्शाते हुए महर्षि मनुस्मृति का उद्धरण देकर लिखते हैं: –

शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चौति शूद्रताम्।
क्षत्रियाज्जातमेवन्तु विद्याद्वैश्यात्तथैव च।। मनु०।।

जो शूद्रकुल में उत्पन्न होके ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य के समान गुण, कर्म, स्वभाव वाला हो तो वह शूद्र ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य हो जाय, वैसे ही ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्यकुल में उत्पन्न हुआ हो और उस के गुण, कर्म, स्वभाव शूद्र के सश हों तो वह शूद्र हो जाय। वैसे क्षत्रिय, वैश्य के कुल में उत्पन्न होके ब्राह्मण वा शूद्र के समान होने से ब्राह्मण और शूद्र भी हो जाता है। अर्थात् चारों वर्णों में जिस–जिस वर्ण के सश जो–जो पुरुष वा स्त्री हो वह–वह उसी वर्ण में गिनी जावे।

'जन्मना जायते शूद्ररू कर्मणा द्विज उच्यते' का उद्घोष करने वाले महर्षि मनु को खलनायक मानने वाला पीड़ित वर्ग क्या महर्षि मनु के इस आदेश को स्वीकार करते हुए अपने वर्तमान कर्म के अनुसार वर्ण को धारण करने के लिए तैयार है? यदि दलित वर्ग का कोई व्यक्ति सेना में अफसर है तो क्या अपने दलितपन को त्यागकर क्षत्रिय घोषित होने को तैयार है; कोई व्यक्ति अच्छा व्यापार करता है तो दलितपन छोड़कर वैश्य घोषित होने को तैयार है; या दलित व्यक्ति ब्राह्मण के किए जाने वाले कार्यों को कर रहा है तो क्या वह

अपने दलितपन को छोड़कर ब्राह्मण घोषित होने को तैयार है?

यह यक्ष प्रश्न है जिनका उत्तर महर्षि दयानंद के सच्चे सिपाही को छोड़कर ना कोई दे सकता है ना कोई आचरण में ला सकता है। इसलिए आर्यसमाज के पास तो मार्ग दयानंद की सेना में सच्चे सिपाहियों की भर्ती करना ही है। यह मार्ग तन, मन, धन, समय के साथ साथ एषणाओं का त्याग मांगता है।

विश्व में जंगली मत इसलिए फैल गए, संगठन के स्थान पर गिरोहों का वर्चस्व इसलिए है कि जंगली मतों और गिरोहों के स्वार्थों की पूर्ति के लिए तन, मन, धन और समय देने वाले बहुत है!

तो आर्य समाजी क्या करें?

सुनिश्चित करें कि हम आर्यसमाज के लिए अपना अधिकतम समय, तन, मन व धन तो दें ही, अपने पूरे परिवार के साथ इसकी उन्नति में लगें।

समय, धन और जीवन के दान से तो पाखंड भी फल फूल रहा है। आर्यसमाज को ये मिलेंगे तो इसके उत्थान को कोई रोक नहीं सकता। जो हम आर्य समाज के साथ मिलकर इसे पोषित ना कर सके, तो स्वयं महर्षि के शब्दों में कुछ भी हाथ ना लगेगा। आर्यसमाज के अलावा भी अन्य संगठनों को ऋषि के इस वाक्य पर बार बार विचार करना चाहिए कि आखिर एक ऋषि ने क्यों लिखा कि आर्यसमाज से अन्यत्र कुछ भी हाथ न आयेगा।

— कमल किशोर आर्य

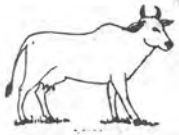

अपाहिज व बेसहारा गौधन की रक्षार्थ जोधपुर की

प्राचीनतम महर्षि दयानन्द गौशाला,मण्डोर

—आर्यसमाज जोधपुर रातानाड़ा के अन्तर्गत

यह गौशाला जोधपुर की 109 वर्ष पुरानी गौशाला है इसमें गायों की देखभाल उचित ढंग से की जाती है आप भी अपना समय एवं दान देकर पुण्य के भागीदार बन सकते हैं । अत: आप द्वारा दिया गया दान 80जी के तहत छूट प्राप्त है । आप एवं अपने सहयोगियों से गौशाला में दान देकर 80जी की छूट प्राप्त कर लाभ प्राप्त कर पुण्य के भागीदार बन सकते हैं ।

UCo Bank A/c 05630110041192
मण्डोर ब्रांच
IFSC UCBA0000563

सचिव
दुर्गादास वैदिक

ईश्वर-स्तुति

अहानि शं भवन्तु नः शꣳरात्रीः प्रति धीयताम्। शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातहव्या। शं न इन्द्रापूषणा वाजसातौ शमिन्द्रासोमा सुविताय शंयोः।।२३।। —यजुः०३६।११

व्याख्यान— हे क्षणादिकालपते! "**अहानि, शं, भवन्तु, नः**" आपके नियम से [**नियन्त्रित**] सब दिवस हमको सुखरूप ही हों, "**शम् रात्रीः, प्रतिधीयताम्**" हे भगवन्! हमारे लिए सर्वरात्रियाँ भी आनन्द से बीतें। दिन और रात्रियों को हमारे लिए सुखकारक ही आप धारण करो, जिससे सब समय में हम लोग सुखी ही रहें। हे सर्वस्वामिन्! "**इन्द्राग्नी**" सूर्य तथा अग्नि— ये दोनों "**नः**" हमको आपके अनुग्रह से और नानाविध रक्षाओं से "**शम् भवताम्**" सुखकारक हों। "**इन्द्रावरुणा रातहव्या**" हे प्राणाधार! आपकी प्रेरणा से होम से शुद्धगुणयुक्त हुए वायु और चन्द्र "**नः**" हम लोगों के लिए "**शम्**" सुखरूप ही सदा हों। "**इन्द्रापूषणा, वाजसातौ**" हे प्राणपते! आपकी रक्षा से पूर्ण आयु और बलयुक्त प्राणवाले तथा अत्यन्त पुरुषार्थयुक्त [**होके**] हम लोग अपने युद्ध में स्थिर रहें, जिससे शत्रुओं के सम्मुख हम निर्बल कभी न हों "**इन्द्रासोमा सुविताय शंयोः**" (**प्राणापानौ वा इन्द्राग्नी इत्यादि शतपथे**") हे महाराज! आपके प्रबन्ध से [**शासित होकर**] राजा और प्रजा परस्पर विद्यादि सत्यगुणयुक्त होके अपने ऐश्वर्य का उत्पादन करें तथा आपकी कृपा से परस्पर प्रीतियुक्त हों [**तथा**] अत्यन्त सुख-लाभों को प्राप्त हों ओर हम पुत्र लोगो को सुखी देखके आप अत्यन्त प्रसन्न हो और हम भी प्रसन्नता से आप और आपकी जो सत्य आज्ञा है, उसमें ही तत्पर हों।।२३।।

—आर्याभिविनिय

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास, जोधपुर के प्रकल्प

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं सदस्य प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं की ओर से कक्ष निर्माण की योजना है। न्यास के व्यापक स्वरूप को सार्थक करते हेतु सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं सदस्य प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं को पत्र लिखकर अनुरोध किया गया है कि वे न्यास स्थल पर एक एक कक्ष अपने सहयोग से अपने नाम से बनवाएँ। प्रत्येक कक्ष की अनुमानित लागत तीन लाख रुपये रखी गई है।

आर्यजनों के उत्साह और विद्वज्जनों के मार्गदर्शन से न्यास के वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार-कार्य में कुछ वर्षों में आशातीत गति आई है। गत कुछ वर्षों में भव्य यज्ञशाला, विशाल सत्संग-भवन आदि का निर्माण हुआ है। प्रसिद्ध वैदिक विद्वान आचार्य सत्यानंद जी वेदवागीश का स्थायी सानिध्य और मार्गदर्शन न्यास को प्राप्त है। न्यास में वर्ष भर आर्य समाज की गतिविधियाँ संचालित होती है।

न्यास द्वारा आगन्तुक अतिथियों के लिए भोजनशाला संचालित होती है। निःशुल्क होम्योपेथी चिकित्सालय भी न्यास द्वारा संचालित किया जाता है।

ऐतिहासिक महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन के ऐतिहसिक स्वरूप को संरक्षित करने के लिए न्यास भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग से निरन्तर सम्पर्क में है।

वेद-वचन

विदुषी नारियाँ

सूयवसाद्भगवती हि भूया अथो वयं भगवन्तः स्याम।
अद्धि तृणमघ्न्ये विश्वदानीं पिब शुद्धमुदकमाचरन्ती।।—ऋग्वेद १।१६४।४०

पदार्थः— हे **(अघ्न्ये)** न हनन करने योग्य गौ के समान वर्त्तमान विदुषी! तू **(सूयवसात्)** सुन्दर सुखों को भोगनेवाली **(भगवती)** बहुत ऐश्वर्यवती **(भूयाः)** हो कि **(हि)** जिससे **(वयम्)** हम लोग **(भगवन्तः)** बहुत ऐश्वर्ययुक्त **(स्याम)** हों। जैसे गौ **(तृणम्)** तृण को खा **(शुद्धम्)** शुद्ध **(उदकम्)** जल को पी और दूध देकर बछड़े आदि को सुखी करती है, वैसे **(विश्वदानीम्)** समस्त जिसमें दान उस क्रिया का **(आचारन्ती)** सत्याचरण करती हुई **(अथो)** इसके अनन्तर सुख को **(अद्धि)** भोग और विद्यारस को **(पिब)** पी।

भावार्थः— इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमा अलंकार है। जब तक माता-जन वेदवित् न हों तब तक उनके सन्तान भी विद्यावान् नहीं होते। जो विदुषी हो, स्वयंवर विवाह कर सन्तानों को उत्पन्न कर और उनको अच्छी शिक्षा देकर उन्हें विद्वान् करती हैं, वे गोओं के समान समस्त जगत् को आनन्दित करती हैं।

श्रेष्ठ अन्न का सेवन

अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः।
प्रप्र दातारं तारिषऽऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे।। —यजुर्वेद।११।८३

पदार्थः— हे **(अन्नपते)** ओषधि, अन्नों के पालन करनेहारे यजमान वा पुरोहित! आप **(नः)** हमारे लिए **(अनमीवस्य)** रोगों के नाश से सुख को बढ़ाने **(शुष्मिणः)** बहुत बलकारी **(अन्नस्य)** अन्न को **(प्रप्र देहि)** अति प्रकर्ष के साथ दीजिए और इस अन्न के **(दातारम्)** देनेहारे को **(तारिष)** तृप्त कर तथा **(नः)** हमारे **(द्विपदे)** दो पगवाले मनुष्य आदि तथा **(चतुष्पदे)** चार पगवाले गौ आदि पशुओं के लिए **(ऊर्जम्)** पराक्रम को **(धेहि)** धारण कर।

भावार्थः— मनुष्यों को चाहिए कि सदैव बलकारी, अरोग्यप्रद अन्न को आप सेवें और दूसरों को देवें। मनुष्य तथा पशुओं के सुख और बल को बढ़ावें, जिससे ईश्वर के सृष्टिक्रम के अनुकूल आचरण से सबके सुखों की सदा उन्नति होवे।

बल का दान

त्वामिद्धि हवामहे सातौ वाजस्य कारवः।
त्वां वृत्रेष्विन्द्र सत्पतिं नरस्त्वां काष्ठास्वर्वतः।।१३४।। सामवेद

पदार्थः— (इन्द्र) हे परमात्मन्! **(अर्वतः)** अश्व आदि पर चढ़नेवाले वीर **(नरः)** पुरुष: **(वृत्रेषु)** शत्रुओं से घेरे जाने पर **(त्वाम्)** आपका सहारा लेते हैं **(काष्ठासु)** सब दिशाओं में **(सत्पतिम्)** सज्जनों के रक्षक **(त्वाम्)** आपको भजते हैं, अतः **(कारवः)** हम स्तोता भक्तजन भी **(वाजस्य)** बल के **(सातौ)** दान - निमित्त **(त्वाम्, इत्, हि)** आपको ही **(हवामहे)** पुकारते हैं।

भावार्थः— जिस प्रकार सब दिशाओं में सज्जनों के रक्षक आप परमात्मा को, शत्रुओं की भीड़ पड़ने पर, बल प्राप्त करने के लिए, वीर पुरुष पुकारते हैं, इसी प्रकार हे भगवन्! हम भक्तजन भी कामादि शत्रुगण की भीड़ में उनको परास्त करने को बल का दान आपसे मांगते हैं।

आगे बढ़ो

अनुहूतः पुनरेहि विद्वानुदयनं पथः।
आरोहणमाक्रमणं जीवतोजीवतोऽयनम्।।—५।३०।७ (अथर्ववेद)

पदार्थः— (पथः) मार्ग के **(उदयनम्)** चढ़ाव (उत्कृष्ट गति) को **(विद्वान्)** जानता हुआ **(अनुहूतः)** मामा, पिता, आचार्यों प्रीति से बुलाया गया तू **(पुनः)** फिर **(आ इह)** आ **(आरोहणम्)** ऊपर चढ़ना और **(आक्रमणम्)** विघ्नों को आक्रांत करके आगे बढ़ना **(जीवतोजीवतः)** प्रत्येक जीव का **(अयनम्)** मार्ग है।

भावार्थः— मनुष्य उन्नति के उपायों को जानकर सदा बढ़ता रहे, जैसेकि चींटी आदि छोटे-छोटे जीव भी ऊँचा चढ़ने में लगे रहते हैं। हम भी बड़ों द्वारा निर्देशित मार्ग पर आगे बढे। ऊपर उठना और आगे बढना ही जीवन का मार्ग है- इस बात को हम समझें।

सोम प्रभु की महिमा

त्वं सोम क्रतुभि सुक्रतुर्भूः, त्वं दक्षैः सुदक्षो विश्ववेदाः।
त्वं वृषा वृषत्वेभिर्महित्वा, द्युम्नेभिर् द्युम्न्यभवो नृचक्षाः।। ऋग्.१.९१.२

ऋषिः गोतमः राहूगणः। देवता सोमः। छन्दः पङ्क्तिः।

(सोम) हे जगदुत्पादक तथा शुभगुणप्रेरक परमात्मन्! **(त्वं)** तू **(क्रतुभिः)** प्रज्ञाओं और कर्मों से **(सुक्रतुः)** सुप्रज्ञ और सुकर्मा **(भूः)** हुआ है। **(विश्ववेदाः)** सर्वव्यापक तथा सर्वज्ञ **(त्वं)** तू **(दक्षैः)** दक्षताओं एवं बलों से **(सुदक्षः)** सुदक्ष [हुआ है]। **(त्वं)** तू **(वृषत्वेभिः)** विद्या, सुख, धन, आदि की वर्षाओं से **[तथा] (महित्वा)** महिमा से **(वृषा)** वर्षक तथा महान् **[हुआ है],[और](नृचक्षाः)** मनुष्यद्रष्टा **[तू] (द्युम्नेभिः)** तेजों, यशो, अन्नों, और धनों से **(द्युम्नी)** तेजस्वी, यशस्वी, अन्नवान् और धनी **(हुआ है)**।

हे सोम! हे जगत् के रचयिता तथा हृदय में शुभ गुणों की प्रेरणा करने वाले परमात्मन्! मैं जब कभी तुम्हारे स्वरूप पर दृष्टिपात करता हूँ, तब मुग्ध हो जाता हूँ। तुम्हारे अन्दर जैसे अद्भुत गुण- कर्मों का सम्मिलन और सामंजस्य है, उसे देख श्रद्धा से तुम्हारे प्रति मेरा मस्तक नत हो जाता है। तुम 'विश्ववेदाः' हो, विश्वव्यापक और विश्ववित् हो; विश्व के कण-कण में विद्यमान रहते हुए विश्व के प्रत्येक घटनाचक्र को जानने वाले हो। तुम 'नृचक्षाः' हो, प्रत्येक मनुष्य के दृष्टा हो। ज्यों ही मनुष्य अपने मन में अच्छा या बुरा कोई विचार लाता है अथवा अच्छा या बुरा कोई कर्म करता है, त्यों ही तुम उसे जान लेते हो। तुम अपने क्रतुओं के कारण 'सुक्रतु' कहलाते हो। 'क्रतु' शब्द से सूचित होने वाले ज्ञान और कर्म तुम्हारे अन्दर आदर्श रूप में विद्यमान हैं। तुम्हारे ज्ञान और कर्म दोनों ही सत्य, शिव और सुन्दर हैं। चारों वेद तुम्हारे अगाध और शुभ ज्ञान के साक्षी है और यह सकल ब्रह्माण्ड तुम्हारे व्यवस्थित शुभ कर्म का साक्षी है। तुम दक्षताओं एवं बलों से 'सुदक्ष' हो। तुम्हारी दक्षता, तुम्हारा शिल्प-कौशल, तुम्हारा कला-चातुर्य जगत् की एक-एक वस्तु में, तरु-वल्लरियों में, फूल-पत्तियों में, भूमि - आकाश में, चाँद - सितारों में प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर हो रहा है। तुम्हारा बल, तुम्हारे अपार सामर्थ्य का तब पता लगता है जब तुम प्राणियों को किसी ऐसी भयंकर विपत्ति से बचा लेते हो जिसके प्रतिकार के लिए वे स्वयं बेबस होते हैं, या किन्ही दुर्जनों को उनके द्वारा किये जाने वाले सम्पूर्ण रक्षा - प्रयासों को विफल करके तुम काल का ग्रास बना देते हो।

हे सोम प्रभु! तुम अपने द्वारा हमारे ऊपर, निरन्तर की जाने वाली वर्षाओं से 'वृषा' या वर्षक बने हुए हो। तुम हमारे ऊपर जल, विद्या, धन, सुख, विनय, सत्य, न्याय, दया,रक्षा आदि की सतत वृष्टि करते रहते हो, जिससे हम परिपुष्ट होते हैं। हे प्रभु! तुम 'द्युम्नों' से द्युम्नी' बने हुए हो। तेज, यश, धन, अन्न आदि प्रशस्त द्युम्न के तुम धनी हो, अतएव प्रशस्य और वन्दनीय हों।

—वेदमञ्जरी से

ऋषिगाथा

गुरुदक्षिणा

शुद्ध मन महर्षि की, सुसीख पूर्ण हो गई।
चित्त शंक भाव, भूल, चूर्ण चूर्ण हो गई।।१।।

अष्ट अंग, योग वेद, ज्ञान, ध्यान, पढ़ चुके।
न्याय, भाष्य, और ग्रन्थ, सीढ़ियाँ उतर चुके।।२।।

था कहीं विराम खान, और पान था कहीं।,
महर्षि के लिये निवास, था कहीं कभी कहीं।।३।।

ज्ञान धाम था कहीं, तथैव स्नान था कहीं।
दुग्धपान और अंग, वस्त्र था न था कहीं।।४।।

जागरण हुआ कभी, पलक कहीं लग सकी।
सलिल प्रभाव पा कहीं, प्रसुप्त आँख जग सकी।।५।।

सभी शरीर तप गया, महान् शीत ताप से।
महर्षि किन्तु था अचल, हिला न कष्ट शाप से।।६।।

कभी महर्षि को प्रबल, पहाड़ चीरने पड़े।
कभी महर्षि को अरण्य भी विदीरने पड़े।।७।।

कहीं निवास भूमि पर, कभी निवास गालियाँ।
कही मिली सहानुभूतियाँ, प्रचंड गालियाँ।।८।।

चले महर्षि खोजते, महान् गुरु मिले कही।,
चले महाष खोजते, न दु:ख से टले कही।।९।।

महर्षि ज्ञान तीर्थ धाम, कृष्ण जन्म भू बनी।
सुधन्य धन्य कृष्ण भूमि, आज देव भू बनी।।१०।।

गरीब! बाल मैं पिता, नहीं समीप दक्षिणा।
न अर्ध्य, पुष्प, भेंट, माल, थाल की प्रदक्षिणा।।११।।

पिता! समान पूजनीय, देव आज जा रहा।
करो बिदा, परन्तु क्यों, दृगों में वारि आ रहा।।१२।।

सुज्ञान धन समेट कर, सुजान शिष्य मंडली।
समीप वास त्याग, दूर देश को सदा चली।।१३।।

करे प्रदान दक्षिणा, सुरत्न, राज, भोग, धन।
ये आध सेर लोंग हैं, करो पिता इन्हें ग्रहण।।१४
सुने वचन महर्षि के विछोह ताप छा गया।
मुंदे नयन युगों हुये, तथापि नीर आ गया।।१५।।
कहा-न चाह है मुझे सुदक्षिणा मिले कहीं।
न चाह-वत्स! आज, भक्त भावना मिले कहीं।।१६।।
वसे जहाँ किया प्रयत्न, घोंसला बना लिया।
विहङ्ग वंश की तरह, मनोविनोद पा लिया।।१७।।
परन्तु नीड़ त्याग दूर, दूर भी चले गये।
अनित्य यह निवास, संग-संग कौन कब रहे।।१८।।
करने यही कथन कि:—, सत्य पथ छोड़ना नहीं।
अनार्ष ग्रन्थ त्याग, वेद भाव त्यागना नहीं।।१९।।
चलें प्रपंच छूतछात, जाति, पांति, देश में।
करो प्रचार सत्य ज्ञान, का अजान देश में।।२०।।
कहीं विलास भावना, कहीं अनेक पंथ हैं।
कहीं कुवाम मार्ग और, तंत्र मंत्र ग्रंथ हैं।।२१।।
कहीं शिखा कटे, कहीं, सुधेनु वंश नाश है।
मचा प्रचण्ड तम, तुही, प्रकाश है, विकाश है।।२२।।
अनाथ आज हो रही, सुभारतीय एकता।
विदेश पांव के तले, दबी पड़ी स्वतंत्रता।।२३।।
सुसुप्त देश,वेष, भावना, विदेश की यहाँ।
करे निवास, त्रास, नाश, दीखता जहाँ-तहाँ।।२४।।
तुझे हिरौल बन यहां, प्रकाशवान सृष्टि कर।
स्वतंत्रता विधायिनी, प्रसुप्त रागनी अमर—।।२५।।
गुंजारनी, संवारने मनुज, दलित, अनाथ जन।
बढ़ो-बढ़ो बढ़े चलो, सुपथ पर धरे चरण।।२६।।
उसी समय महर्षि मन, प्रसुप्त गान गा उठा।
प्रकाशवान देश का, भविष्य जगमगा उठा।।२७।।

दयानंद कौन है

(विद्वानों के कर्तव्य बोधक)

आर्य समाज के परिवेश में बहुत से लोगों के मुख से सुना है कि विद्वानों का सत्कार करना चाहिए। जिस घर में विद्वानों का आगमन होता रहता है वह घर स्वर्ग बनता है, व्यसनों से दूर रहता है, घर के सदस्यों में कभी प्रेम समाप्त नहीं होता, घर उन्नति को प्राप्त होता है। यही बात समाज में घटाएँ तो समाज की उन्नति होती है। यही बात राष्ट्र पर घटाएँ तो राष्ट्र की उन्नति होती है।

कई बार मस्तिष्क में आता है कि कौन सा सम्राट या राजा ऐसा था जिसका राजगुरु नहीं था? कौन सा समाज या घर ऐसा है, जिसमें अपना पुरोहित नहीं है?घरों में संस्कार के लिए समाज का नियत पुरोहित ही आता है। हिंदुओं में कोई परिवार ऐसा नहीं जिसका पुरोहित नहीं होता। चलो मान लेते हैं कि जनसामान्य का पुरोहित निर्योग्य होता है। किंतु ठाकुरों, राव राजाओं, महाराजाओं, सम्राटों के पुरोहित तो मूर्ख नहीं हो सकते। फिर भारत का पतन क्यों हुआ?

चलो! महर्षि के प्रादुर्भाव के समय से देखते हैं। कोई समय ऐसा नहीं रहा जब महर्षि को चुनौती नहीं मिली और ऐसा भी नहीं है कि महर्षि को चुनौती देने वाले सभी मूर्ख ही थे। हॉ! यह कह सकते हैं कि अध्ययन के अंतर के अतिरिक्त वह ष्टि उन लोगों के पास नहीं थी जो महर्षि दयानंद के पास थी।

महर्षि को योगियों के नाम से अधिकांश भोगी ही मिले, किंतु महर्षि को योग बहुत ही योग्य योगियों ने सिखलाया जिनका उपकार महर्षि ने अपने स्वयंकथित जीवन चरित्र में भी माना है। संस्त वाङ्मय जानने वाले महर्षि के समय में बहुत से विद्वान् थे, व्याकरण को जानने वाले भी बहुत थे; महर्षि के समय में महाभाष्य तक पर टिकाएँ उपलब्ध थीं जिनको स्वयं महर्षि ने भी पढ़ा है। व्याकरणसूर्य गुरु विरजानंद जी ने अन्य शिष्यों के साथ महर्षि को भी व्याकरण की शिक्षा दी। महर्षि ने अपनी दृष्टि से विभिन्न मान्यताओं /सिद्धांतों का प्रतिपादन या खंडन आरंभ किया तो, गुरुवर विरजानंद जी की दृष्टि में अखंडित कुछ मान्यताओं का महर्षि द्वारा खंडन करने की शिकायत जब शिष्यों के माध्यम से गुरुजी के पास पहुंची तो उनके यही शब्द थे कि दयानंद कहता है तो ठीक ही कहता होगा! अर्थात् महर्षि दयानंद की दृष्टि को गुरुवर विरजानंद ने अच्छी तरह परख कर ही राष्ट्र और वेदों के उद्धार के लिए उनका जीवन गुरुदक्षिणा में मांगा था। वह दृष्टि ऐसी है जो महर्षि को सब लोगों से अलग करती है और जिन लोगों ने अपने योगदान से महर्षि को महर्षि बनाया, उनका सम्मान अक्षुण्ण रखते हुए इस अकिंचन का यह मानना है कि उस दृष्टि ने महर्षि को सबसे महान बना दिया।

समाज और राष्ट्र को दिशा देने के लिए ज्ञान जरूरी है, अत्यावश्यक है और

ज्ञानवान लोग समाज और राष्ट्र में विद्वान् कहलाते हैं, जिनकी कमी भारत में कभी नहीं रही। किंतु महाभारत काल के पश्चात आज दिन तक भारत का बेड़ा मझधार में गोते खा रहा है। हां! कुछ समय के लिए भारत का बेड़ा महर्षि जैसे लोगों ने अवश्य संभाला और उसे किनारे लगाने का पूरा प्रयास किया। बहुत हद तक संभाल महर्षि ने बेड़े को किनारे की ओर अग्रसर भी किया और इस बेड़े में सवार योग्य लोगों को बेड़े के संचालन का तरीका भी सिखाया। यह बात अलग है कि अपने ही पैर को कुल्हाड़ी मारने वाले कुछ लोगों ने महर्षि को बेड़े से हटा ही दिया।

हम पुनः बात महर्षि की दृष्टि की करते हैं। यह दृष्टि यदि सभी विद्वानों में आ जाए तो भारत का बेड़ा पार हो सकता है। विद्वानों को महर्षि प्रदत्त यह दृष्टि क्या है?

सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका में महर्षि ने बहुत ही स्पष्ट रूप से बताया है,–

"**विद्वान् आप्तों** का यही मुख्य काम है कि उपदेश वा लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने सत्याऽसत्य का स्वरूप समर्पित कर दें, पश्चात् वे स्वयम् अपना हिताहित समझ कर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द में रहें।

मनुष्य का आत्मा सत्याऽसत्य का जानने वाला है तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि, हठ, दुराग्रह और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड़ असत्य में झुक जाता है। परन्तु इस ग्रन्थ में ऐसी बात नहीं रक्खी है और न किसी का मन दुखाना वा किसी की हानि पर तात्पर्य है, किन्तु जिससे मनुष्य जाति की उन्नति और उपकार हो, सत्याऽसत्य को मनुष्य लोग जान कर सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करें, क्योंकि सत्योपदेश के विना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है।"

महर्षि अच्छी तरह जानते थे की विद्वान लोग ही (भले ही वे अंधों में काना राजा हो) विभिन्न मतों के प्रणेता और मत–भिन्नता के कारण है। उनकी दृष्टि में विद्वानों की मतभिन्नता दूर होने से ही सच्ची एकता स्थापित होना संभव है। इसलिए उन्होंने भूमिका में आगे लिखा, –

"**विद्वानों** के विरोध से अविद्वानों में विरोध बढ़ कर अनेकविध दुःख की वृद्धि और सुख की हानि होती है। इस हानि ने, जो कि स्वार्थी मनुष्यों को प्रिय है, सब मनुष्यों को दुःखसागर में डुबा दिया है। इनमें से जो कोई सार्वजनिक हित लक्ष्य में धर प्रवृत्त होता है, उससे स्वार्थी लोग विरोध करने में तत्पर होकर अनेक प्रकार विघ्न करते हैं। परन्तु 'सत्यमेव जयति नानृतं सत्येन पन्था विततो देवयानः।' अर्थात् सर्वदा सत्य का विजय और असत्य का पराजय और सत्य ही से **विद्वानों** का मार्ग विस्तृत होता है। इस दृढ़ निश्चय के आलम्बन से **आप्त** लोग परोपकार करने से उदासीन होकर कभी सत्यार्थप्रकाश करने से नहीं हटते। यह बड़ा दृढ़ निश्चय है कि 'यत्तदग्रे विषमिव परिणामेऽमृतोपमम् ।' यह गीता का वचन है।"

स्वार्थी या नासमझ लोग ही महर्षि प्रणीत सत्यार्थ प्रकाश का विरोध करते हैं,

क्योंकि इसमें खंडन किया गया है। अपने मत के खंडन से उस मत के अनुयायी रुष्ट होते हैं। किंतु महर्षि अपना मंतव्य समझाते हुए लिखते हैं, –

"इसमें यह भी अभिप्राय रक्खा है कि सब मतमतान्तरों की गुप्त वा प्रकट बुरी बातों का प्रकाश कर **विद्वान्** अविद्वान् सब साधारण मनुष्यों के सामने रक्खा है, जिससे सब से सब का विचार होकर परस्पर प्रेमी हो के एक सत्य मतस्थ होवें।

यद्यपि मैं आर्यावर्त्त देश में उत्पन्न हुआ और वसता हूँ, तथापि जैसे इस देश के मतमतान्तरों की झूठी बातों का पक्षपात न कर याथातथ्य प्रकाश करता हूँ, वैसे ही दूसरे देशस्थ वा मत वालों के साथ भी वर्त्तता हूँ। जैसा स्वदेश वालों के साथ मनुष्योन्नति के विषय में वर्त्तता हूँ, वैसा विदेशियों के साथ भी तथा सब सज्जनों को भी वर्त्तना योग्य है। क्योंकि मैं भी जो किसी एक का पक्षपाती होता तो जैसे आजकल के स्वमत की स्तुति, मण्डन और प्रचार करते और दूसरे मत की निन्दा, हानि और बन्ध करने में तत्पर होते हैं, वैसे मैं भी होता, परन्तु ऐसी बातें मनुष्यपन से बाहर हैं।"

मत मतान्तरों के खंडन के पीछे विद्वानों से अपेक्षा को प्रकट करते हुए महर्षि लिखते हैं, –

"इन मतों के थोड़े–थोड़े ही दोष प्रकाशित किए हैं, जिनको देखकर मनुष्य लोग सत्याऽसत्य मत का निर्णय कर सकें और सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करने कराने में समर्थ होवें, क्योंकि एक मनुष्य जाति में बहका कर, विरुद्ध बुद्धि कराके, एक दूसरे को शत्रु बना, लड़ा मारना **विद्वानों** के स्वभाव से बहिः है।"

विद्वानों से अपेक्षा करते हुए, उन्हें प्रेरित करते हुए महर्षि सत्यार्थ प्रकाश के दूसरे समुल्लास में लिखते हैं, – "इन सब मिथ्या व्यवहारों को छोड़ कर धार्मिक, सब देश के उपकारकर्त्ता, निष्कपटता से सब को विद्या पढ़ाने वाले, उत्तम **विद्वान्** लोगों का प्रत्युपकार करना जैसा वे जगत् का उपकार करते हैं, इस काम को कभी न छोड़ना चाहिये।"

तीसरे समुल्लास में लिखा है, –

"**विद्वान्** और विद्यार्थियों को योग्य है कि वैरबुद्धि छोड़ के सब मनुष्यों के कल्याण के मार्ग का उपदेश करें और उपदेष्टा सदा मधुर सुशीलतायुक्त वाणी बोले। जो धर्म की उन्नति चाहै वह सदा सत्य में चले और सत्य ही का उपदेश करे।।१।।"

ग्यारहवें समुल्लास में विद्वानों से बड़ी अपेक्षा रखते हुए महर्षि लिखते हैं , –

"जो **विद्वान्** होता है वह सत्याऽसत्य की परीक्षा करके सत्य का ग्रहण और असत्य को छोड़ देता है।.....जैसे कोई मनुष्य एक का मित्र सब संसार का शत्रु हो, वैसा ही पुराण और तन्त्र का मानने वाला पुरुष होता है क्योंकि एक दूसरे से विरोध कराने वाले ये ग्रन्थ हैं। इन का मानना किसी **विद्वान्** का काम नहीं किन्तु इन को मानना अविद्वत्ता है।.....परोपकार करना धर्म्म और परहानि करना अधर्म्म कहाता है। इसलिए **विद्वान्** को यथायोग्य व्यवहार करके अज्ञानियों को दुःखसागर से तारने के लिये नौकारूप होना चाहिये। सर्वथा मूर्खों के सदृश

कर्म न करने चाहिए। किन्तु जिस में उन की और अपनी दिन प्रतिदिन उन्नति हो वैसे कर्म करने उचित हैं। .....जब सब **विद्वान्** एक सा उपदेश करें तो एकमत होने में कुछ भी विलम्ब न हो।..... यही सब मनुष्यों का, विशेष **विद्वान्** और संन्यासियों का काम है कि सब मनुष्यों को सत्य का मण्डन और असत्य खण्डन पढ़ा सुना के सत्योपदेश से उपकार पहुँचाना चाहिये।"

बारहवें समुल्लास की अनु भूमिका में महर्षि ने लिखा है,– "जब **विद्वान्** लोगों में सत्याऽसत्य का निश्चय नहीं होता तभी अविद्वानों को महा–अन्धकार में पड़कर बहुत दुःख उठाना पड़ता है। इसलिए सत्य के जय और असत्य के क्षय के अर्थ मित्रता से वाद वा लेख करना हमारी मनुष्यजाति का मुख्य काम है। यदि ऐसा न हो तो मनुष्यों की उन्नति कभी न हो।"

तेरहवें समुल्लास में बाइबल की समीक्षा करते हुए एक ही स्थान पर महर्षि लिखते हैं, – "ये बातें सब लड़केपन की हैं, ईश्वर की नहीं, और न किसी **विद्वान्** की क्योंकि **विद्वान्** की भी बात और प्रतिज्ञा स्थिर होती है।। ..... ये लोग जिन्होंने वेद और शास्त्रों को न पढ़ा न सुना उन बिचारे भोले मनुष्यों को अपने जाल में फॅसा के उस के मॉ बाप कुटुम्ब आदि से पृथक् कर देते हैं। इससे सब **विद्वान्** आर्यों को उचित है कि स्वयम् इनके भ्रमजाल से बच कर अन्य अपने भोले भाइयों को बचाने में तत्पर रहैं।।"

चौदहवें समुल्लास को समाप्ति की ओर ले जाते महर्षि लिखते हैं, – "यदि सब **विद्वान् लोग** करें तो क्या कठिनता है कि परस्पर का विरोध छूट, मेल होकर आनन्द में एकमत होके सत्य की प्राप्ति सिद्ध हो।"

इसके अतिरिक्त सत्यार्थ प्रकाश में महर्षि दयानंद सरस्वती ने अनेक स्थानों पर विशेषकर मत सम्प्रदायों की समीक्षा करते हुए जगह जगह पर लिखा है की यह बात विद्वानों के योग्य नहीं अर्थात विद्वान लोगों को ऐसी बातें नहीं माननी चाहिए – यह महर्षि का विवक्षित आदेश है.

हम दुनिया में देखते हैं कि सामान्य व्यक्ति भी अपनी मान्यता को लेकर इतने पूर्वाग्रही होते हैं कि अपनी गलत मान्यता को स्थापित करने के लिए कुतर्क करते रहते हैं, ओछी वार्ता करते हैं, तो मत वाले विद्वानों का तो कहना ही क्या? यहां हम विद्वान शब्द का प्रयोग महर्षि की मान्यता अनुसार नहीं, वरन प्रचलित शब्द के रूप में कर रहे हैं। मतों के प्रणेता, विद्वान नहीं तो अंधों में काना राजा तो थे ही और इस सत्य से सुविज्ञ भी थे कि अपने मत की बात गलत है। इसीलिए उन्होंने अपनी बात को इस दुनिया के रचाने, चलाने और नाशनेहारे से मिली बताया और दूसरों से संवाद को पाप भी बताया। यही कारण है कि अपने मत प्रणेता को ईश्वरीय दूत मानते हुए सामान्य जन उसके शब्द मात्र को भी प्रमाण मानते हैं। उन मतों के पश्चातवर्ती विद्वान प्रणेता के शब्दों से अपना स्वार्थ सिद्ध करते हुए आंख के अंधे और गांठ के पूरे अनुयायियों को बहकाए रखते हैं और अपना स्वार्थ सिद्ध

करते हैं।

यह कितने दुख की बात है कि सत्यार्थप्रकाश में महर्षि ने जिन लोगों को सकारण मूर्ख बताते हुए उनके मंतव्य, दर्शन और रचनाओं को अनार्ष से बताया है– उन लोगों, उनके दर्शन और रचनाओं पर हजारों लोगों ने शोध कर पीएचडी की है और लोगों को पढ़ाते हैं। क्या उनकी विद्वता पर संदेह करना चाहिए?

मुझे एक घटना याद आई। श्री सियाराम दास 'नैय्यायिक' ने महर्षि प्रणीत ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका पर बहुत से आक्षेप किए हैं। महर्षि दयानंद सरस्वती स्मृति भवन न्यास, जोधपुर द्वारा उन्हें आर्य विद्वान् के साथ शास्त्रार्थ की चुनौती दिए हुए बरसों हो गए, लेकिन ना तो वे चुनौती स्वीकार कर पाए हैं और ना ही सत्य को स्वीकार कर अपने आक्षेप हटाते हैं। विशेष बात यह है कि नारियों के वेद पाठ पर चली चर्चा में 'नैय्यायिक' के आक्षेप सामने आए थे कि 'नैय्यायिक' और उनके अनुयाई नारियों के वेद पाठ के विरुद्ध हैं। जब इंटरनेट पर चर्चा चली तो 'नय्यायिक' की शिष्याओं ने भी आर्यसमाजियों को अपशब्द कहे। अब यह सोचने की बात है कि इन शिष्याओं के उद्धारक महर्षि दयानंद है या नैय्यायिक? इन शिष्याओं में, तीन तलाक का विरोध करने सड़क पर उतरी मुस्लिम महिलाओं में और सबरीमाला मंदिर में महिलाओं के प्रवेश के विरुद्ध उतरी महिलाओं की मानसिकता में क्या अंतर है? वस्तुतः यह क्रोध की नहीं, वरन दया की पात्र हैं। लंबे समय की दासता के कारण स्वतंत्र सोच रखने में ये असमर्थ है।

अपने ही स्वत्व और मुक्ति के मार्ग से अनभिज्ञ अनुयायियों और शिष्य मंडली, उनके भ्रष्ट मार्गदर्शकों, मठाधीशों रूपी विद्वानों की स्वार्थ मंडलियों की भीड़ से बिल्कुल अलग सत्य मानता, सत्य कहता और सत्य को मनवाने को दृढ़प्रतिज्ञ एक सन्यासी एक हाथ में वेद और दूसरे हाथ में ईशविश्वास की ध्वजा थामे खड़ा उन विद्वानों को सत्याचरण के लिए ललकारता खड़ा है!

कौन है वह??

वह है विद्वानों का मार्गदर्शक!

विद्वानों को कर्तव्य बोध कराने वाला!

देव दयानंद!

—कमल किशोर आर्य

वैदिक धर्म और वर्तमान आर्यसमाजी

–स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज

(स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने जिन पत्रों का सम्पादन कार्य किया था, उनमें 'श्रद्धा' भी एक है। स्वामीजी महाराज ने अपने सम्पादकीय लेखों में समसामयिक विषयों के साथ साथ गूढ़ सैद्धान्तिक विषयों और मार्गदर्शी विषयों पर लेखनी चलाकर आर्यों को, पाठकों को धन्य किया है। विभिन्न षड्यन्त्रों का शिकार होकर क्षीणता की ओर अग्रसर प्रतीत हो रहे आर्यसमाज की अवस्था को देखकर कुण्ठित हो रहे आर्यों और जनसामान्य के लिए यह अक्टूबर १९20 खीस्ताब्द का (किन्तु कालजयी) प्रेरणादायी लेख श्रद्धेय स्वामीजी के बलिदान मास में आपकी सेवा में प्रस्तुत है। पाठकगण! अदम्य साहस और इच्छाशक्ति के धनी, गुरुकुल के दयालु और सौम्य आचार्य, परम पुरुषार्थ के प्रतिमान, लाखों विधर्मियों को स्वधर्म में दीक्षित करने वाले, अछूतोद्धारक, ,खण्डन और मण्डन दोनों के निष्णात् और अब्दुल रशीद पर भी विश्वास करने वाले कल्याणमार्ग के पथिक की अनुभवसिद्ध लेखनी है यह!!! –– सं0)

वैदिक धर्म सार्वभौम और सार्वदेशिक है। इसका कोई आदि ना कोई अंत! जिस धर्म का सदैव राज रहा है, जो उस समय था जबकि वर्तमान सृष्टि न हुई थी, जो प्रवाह से अनादि चला आता है, जिसका सृष्टि क्रम समर्थन करता है– वही वैदिक धर्म है।

इस पवित्र धर्म का पुनरुद्धार तथा रक्षण हो, इसलिए ऋषि दयानंद ने आर्य समाज की बुनियाद रखी। वह सत्यार्थ प्रकाश के अंत में लिखते हैं– **"मैं अपना मंतव्य उसी को जानता हूं कि जो सब काल में सबको एक–सा मानने योग्य हो। मेरा कोई नवीन कल्पना का मत मतांतर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है, किंतु जो सत्य है उसको माननना–मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना–छुड़वाना मुझको अभीष्ट है। जो जो बात सबके सामने माननीय है उसको मानता और जो मत मतांतर के झगड़े हैं उनको मैं पसंद नहीं करता, क्योंकि इन्हीं मतवालों ने अपने मतों का प्रचार कर मनुष्य को फँसाकर परस्पर शत्रु बना दिए हैं।"**

पिछले 12 वा 13 वर्षों से मैं इस सच्चाई पर अपने व्याख्यानों तथा लेखों में बराबर बल देता रहा हूँ कि जब उपजाऊ जमीन का जोतना–बोना भुलाकर किसी प्रजा ने उसे जंगल बना दिया हो तो पहला काम, एक सच्चे माली का, यह है कि एक हाथ में कुल्हाड़ा और दूसरे में अग्नि लेकर चले। आग से झाड़ी–बूटी इत्यादि को जलाता जाए और कुल्हाड़े से बड़े–बड़े वृक्षों को काटता जाए। परंतु जब भूमि साफ हो जाए और बुद्धिमान माली उसे जोत–बो चुके और उसमें से कोमल पौधे निकल आवें, उस समय आग और कुल्हाड़े का स्थान खाद और पानी और नलाई और बड़ों के हवाले कर देना चाहिए। इसी प्रकार धर्म रूपी उपजाऊ भूमि के गिर्द अंधविश्वास के कारण अविद्याजन्य रिवाजों का फूस और जंगल उग खड़ा हो तब एक धार्मिक संशोधक को खंडन रूपी अग्नि और आचार सुधार रूपी कुल्हाड़े से काम लेना पड़ता है। परंतु जब अंधविश्वास के स्थान में श्रद्धा को स्थापन करके शताब्दियों की अविद्या को दूर कर दिया जाए तब वाणी और कर्म द्वारा खंडन की आवश्यकता नहीं रहती।

जब खंडन की आवश्यकता थी, मैंने भी कुछ कम खंडन नहीं किया। जब दुराचारों से बचाने की आवश्यकता थी, उस समय मैंने और मेरे साथियों ने भी कुछ ढील नहीं की थी। परंतु कुछ वर्षों से लोगों की ऑखें प्रायः खुल चुकी है। जो संशोधन के कार्य आर्यसमाज ने आरंभ किए थे वही दूसरे करने का यत्न कर रहे हैं। जहॉ कट्टर से कट्टर पौराणिक भी मूर्तिपूजा से स्वयं लज्जित हो जाएं, अपनी पुत्रियों का विवाह १६ वर्ष की आयु से कम में और अपने पुत्रों का विवाह २०–२२ वर्षों की आयु से कम में करने की कुप्रथा छोड़ते जाएँ, क्या पुरानी लकीर पीटकर खंडन करने में व्यर्थ समय गॅवाकर मित्रों को शत्रु बनाना कहीं धर्म के लक्षण में आता है! मैंने एक आर्यसामाजिक समाचार पत्र के लेखक को इस बात पर शोक करते पढ़ा कि जिस आर्यसमाज में "रामचंद्र की जय बोलना पाप समझा जाता था वर्तमान समय में आर्यसमाजी उस जय के बुलाने में लज्जा नहीं अनुभव करते।" प्रथम तो यह कल्पना ही निर्मूल है। संवत 1885 में ठाकुर नवल सिंह ने एक गीति बनाई थी जिसकी टेक थी–

"हैं धन्य भाग इस नगर और इस मंदिर के।
जहॉ गुण वर्णन हो रहे रामचंद्र के।"

यदि मर्यादा पुरुषोत्तम रामचंद्र से आर्यों को घृणा होती तो उनके विषय में यदि कवियों में से एक ऊपर की कविता अमृतसर और लाहौर आर्यसमाजों के मंदिर में न गाने पाता। फिर कहा जाता है कि जब खंडन ही छूट जाएगा तो आर्य समाज की हस्ती ही क्या रहेगी! यह भी बड़ी भूल है। मंडन पर तो मैं और सब विचारशील आर्य बल दे रहे हैं और कहते हैं कि स्वमत के मंडन का इस समय आर्यसमाज में अभाव शोचनीय है। शेष रहा खंडन, उसकी तब आवश्यकता होती है जब जनता की ऑखे ना खुली हों। जब मुसलमान हिंदुओं को येन –केन–प्रकारेण कलमा पढ़ा कर और गौमांस खिला कर मोहम्मदी बनाना अपना कर्तव्य समझते थे उस समय गौरक्षा के लिए मोहम्मदी मत का खंडन आवश्यक था। परंतु जब काबुल और दक्षिण हैदराबाद से राजाज्ञा मिलती है कि गाय की कुर्बानी मत करो क्योंकि इससे उनकी हिंदू प्रजा का दिल दुखता है, जब खिलाफत कमेटियॉ स्वयं गोवध बंद कराते फिरती है, जब मुसलमान धर्माचार्य यह व्यवस्था दे रहे हैं कि दोनों दीन अपने अपने मंतव्य पर बिना रोक–टोक चलें और किसी का भी दिल ना दुखाया जाए, जब मुसलमान अपने हिंदू भाइयों के साथ एक स्वर होकर गौमाता को गौमाता की पदवी दें और रतौना के बूचड़खाने के घोर विरोध में सम्मिलित हो गवर्नमेंट को बाधित कर दें कि वह अपनी आज्ञा को लौटा ले, जब मौलाना शौकत अली और मोहम्मद अली ना केवल गौमांस भक्षण को तिलांजलि ही दे दे प्रत्युत गौरक्षा में हिंदुओं के साथ शरीक हो जाएँ, जब यदि आर्यसामाजिक सन्यासी मुसलमानों की धर्म पुस्तक का नाम सत्कार के साथ लेता हुआ उसी मस्जिद में जहॉ पहले कभी गैर मुस्लिम को नमाज के समय घुसने की इजाजत ना हो, 'कुरान मजीद' का हवाला देता हुआ धर्मवीरों के लिए प्रार्थना करे तो मुस्लिम मौलवी आर्यों की धर्म पुस्तक को 'वेद–ए–मुकद्दस' का खिताब देता हुआ उसके नाम पर एकता के लिए अपील करें – उस स्वर्गीय समय में खंडन के दिनों को याद करके 'आहसर्द' भरना विचित्र प्रकार का आर्यत्व है।

यदि आर्यसमाज में सचमुच धर्म की तलाश होती तो इस समय को गनीमत समझ कर सब अपने धर्म को क्रिया में लाने का यत्न करने लग जाते। पहले जब कभी धर्म–कर्म के लिए बल

दिया जाता तो उत्तर मिलता था कि जब चारों और अविद्या फैल रही है तो उसे बिना दूर किए संयम मैं कैसे लगे ? परंतु जब यम–नियमादि के साधनों के लिए पूरा समय मिला है तो चकित से रह गए हैं और सूझता नहीं कि क्या करें! मैंने आर्यसमाज के कुछ प्रचारकों की बात सुनकर यह परिणाम निकाला है कि उनका संतोष तब होता जब ऊपर लिखित अवस्थाएं उनके व्याख्यानों का परिणाम होतीं। ऐसे लोगों की अवस्था ठीक उस जुलाहे की तरह है जिस की कथा मुझे जालंधर के स्वर्गवासी मुख्तार सुनाया करते थे– "बस्ती शेख का एक जुलाहा प्रत्येक तीसरे दिन एक थान बुनकर जालंधर शहर के बाजार में लाता और पॉच वा साढ़े पॉच रूपए में बेच कर चला जाता, परंतु हर बार बड़ी झंझट से थान बिकता। जुलाहा सात वा आठ रूपए से आरंभ करता और खरीददार तीन या साढ़े तीन रुपए से और बड़ी रद्द–प–कद्द के पीछे पॉच या साढे पॉच रूपए पर फैसला होता। इस प्रकार उसे बाजार में ढाई या तीन घंटे लग जाते। एक बार उसे कोई धर्मात्मा खरीदार मिल गया। मूल्य पूछते ही जुलाहे ने साढ़े सात रूपए बताए। खरीदार ने साढ़े सात रूपए उसके हाथ पर रखकर थान लेना चाहा। जुलाहा रुपया परखने लग गया। जब गिरा बजाकर उन्हें ठीक पाया तो थान देना ही पड़ा। जुलाहा हक्का–बक्का रह गया। उसे प्रसन्नता के स्थान पर चिंता सी हो गई। पैर लौटने की ओर नहीं पढ़ते थे। उसे समझ में नहीं आता था कि दो अढ़ाई रुपए अधिक प्राप्त करने पर भी उसके अंदर असंतोष है। उसे इतनी जल्दी लौटते लज्जा आई। मार्ग में एक वृक्ष को देखते ही ठहर गया और सिर की पगड़ी उतार वृक्ष के गिर्द बांध दी और एक होना उसका अपनी दाढ़ी से बांध दिया और लबा दाढ़ी को झटके देना – "साढ़े सात लूंगा, साढ़े तीन दूंगा, अच्छा कहो जो सात से कम ले बाप का बेटा ना हो जो चार से अधिक दे, इत्यादि।" जुलाहा दो घंटों तक इसी प्रकार बोलता रहा, तब कहीं उसका मन शांत हुआ और वह अपने घर को गया।

मैं देख रहा हूँ कि विचारशील आर्यसमाजी तो यह जानकर प्रसन्न होते हैं कि जिस मत–मतान्तरों के झगड़ों से मुक्त अवस्था को ऋषि दयानंद लाना चाहते थे वह अवस्था समीप पहुंच गई है और इसके लिए आर्यसमाज अपने मंतव्य का प्रचार करके अब लोगों को उसके अनुसार चला सकता है। कोई समय था जब कि आश्रम और वर्ण व्यवस्था की बातें, समझता तो कौन, सुनना भी पढ़े–लिखे लोग पसंद नहीं करते थे। आज समय है कि ब्रह्मचर्य के गौरव, गृहस्थ के कर्तव्य और सन्यास के कर्मफल त्याग की महिमा को हिंदू–मुसलमान, सिक्ख, ईसाई सभी सुनने और उस पर अमल करने को तैयार हैं। कोई समय था जब जातीय महासभा (नेशनल कांग्रेस) की वेदी से धर्म और सदाचार के नाम पर अपील करना पाप समझा जाता था जबकि प्रसिद्ध व्यभिचारी पुरुषों को 'बायकाट' करने का हौंसला किसी बिरले महानुभाव को ही होता था और ऐसा करने वाले पर खिल्ली उड़ाई जाती थी, आज समय है कि गुप्त नया सिद्धांत रखने वाले नेता, कि राजनीतिक चालबाजी और युक्ति कौशल्य का खेल है, भी भरी सभा में यही कहने के लिए बाधित होते हैं कि राजनीति को धर्म के राज्य से जुदा नहीं किया जा सकता था। जिस एक बड़े ब्रह्मा की उपासना पर आर्यसमाज का आग्रह था उसके नाम की घोषणा कांग्रेस के पंडाल से गूंज रही है। जिन सच्चाईयों को सिद्धांत रूप से इस समय जनता, बिना मतभेद की मान रही है उसका क्रियात्मक प्रचार आर्य समाज के धर्म प्रचारकों का कर्तव्य है।

इससे बढ़कर और कौन सा अधिकार हो सकता है। राजनैतिक इस समय असहयोग का प्रचार कर रहे हैं। आर्यसमाज ने अधर्म और दुराचार और तघ्नता और अन्याय के विरुद्ध अपने जन्मदिवस से ही असहयोग की घोषणा कर छोड़ी है। आर्य समाज के प्रवर्तक ने आज से 38 वर्ष पहले ही लिख दिया था–

"जैसे पशु बलवान होकर निर्मल को दुख देते हैं और मार भी डालते हैं, जब मनुष्य शरीर पाकर भी वैसा ही कर्म करते हैं तो वे मनुष्य स्वभाव युक्त नहीं, किंतु पशुवत् है। और जो बलवान हो निर्बलों की रक्षा करता है वही मनुष्य कहाता है और जो स्वार्थवश होकर हानि मात्र करता है वह जानो पशुओं का भी बड़ा भाई है।"

यह सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका में, और अंत में लिखा है–

"मनुष्य उसी को कहना कि मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख–दुख और हानि–लाभ को समझें, अन्यायकारी बलवान से भी ना डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं, किंतु अपने सर्व सामर्थ्य से धर्मात्माओं की, चाहे वे महा–अनाथ, निर्बल और गुणरहित ही क्यों न हो, रक्षा, उन्नति, प्रियाचरण और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती सम्राट महाबलवान और गुणवान भी हो तथापि उसका नाश, अवनति और अप्रियाचरण सदा किया करे अर्थात् जहाँ तक हो सके वहाँ अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा किया करें; इस काम में चाहे उसको कितना ही दारुण दुख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी भले ही चले जावें परंतु इस मनुष्यपन रूप धर्म से पृथक कभी ना हो।"

गॉधीजी जिस सिद्धांत पर शनैः–शनैः अनुभव करते हुए अब तक भी पूर्ण रूप से नहीं पहुंचे हैं उसके सर्वांग दृढ़ स्वरूप का दर्शन आर्यसमाज के प्रवर्तक अपनी दिव्य दृष्टि से देख कर, 38 वर्ष पहले ही करा गए।

आर्यवीरों! अन्य लोग अभी वाणी द्वारा प्रचार की घाटी तक ही पहुंचे हैं, परंतु तुम्हारे आगे यह घोषणा 38 वर्षों से चली आती है। इस समय बोलना दूसरों का अधिकार है परंतु उसको कर्तव्य में लाना तुम्हारा कर्तव्य है। तुमने 28 वर्ष से यह शब्द उठाया और 19 वर्ष हुए जब उसे क्रिया में लाकर दिखा दिया कि विदेशी ढंग की शिक्षा 'विष' है। महात्मा गांधी ने इस सत्य को पॉच–छः वर्ष पहले स्वीकार किया और कलकत्ता में यह सम्मति देते हुए कि एक लड़का और लड़की को भी सरकारी स्कूल और कॉलेजों से नहीं उठाना चाहिए। श्री लाला लाजपत राय ने लाहौर में कह दिया कि "अगर महात्मा गांधी कॉलेजों (आर्ट्स कॉलेजों) के बायकाट को अपने प्रोग्राम का हिस्सा बनाते तो मैं इसकी पूरी हिमायत करता क्योंकि मैं आर्ट्स कॉलेजों की तालीम के मुखालिफ हूँ। जिन लालालाजपत राय ने अपने जीवन का बड़ा भाग डी.ए.वी. आर्ट्स कॉलेज के खड़ा करने और उसकी आर्थिक सहायता में लगाया, उनकी यह सम्मति है। क्या आर्यसमाजी नेताओं का कर्तव्य नहीं कि डी.ए.वी. कॉलेज लाहौर और उसकी रावलपिंडी और जालंधर की शाखाओं का संबंध एकदम यूनिवर्सिटी से अलग कर ले? और क्या कानपुर के कॉलिज को भी इन्हीं का अनुकरण करना चाहिए?ऋषि दयानंद की शिक्षा पर अमल करने का यही समय है। क्या निर्भय होकर आर्य पुरुष आचार्य की आज्ञा का पालन करेंगे ?????

आर्यसमाज का इतिहास

—पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति

चतुर्थ खण्ड–तीसरा अध्याय

डी.ए.वी. कॉलेज और महात्मा हंसराज

४. दान

उत्साह का स्थूल रूप दान है। किसी सार्वजनिक संस्था के लिए जनता में उत्साह है या नहीं, इसकी परख आर्थिक सहायता से होती है। इस कसौटी पर परख कर देखें, तो प्रतीत होता है कि आर्यसमाज में उस समय डी.ए.वी. कॉलेज के लिए बड़ा उत्साह था। ऋषि की मृत्यु के कुछ समय पीछे ही लाहौर में जब सभा हुई थी तो ८000) एकत्र हुआ। इस राशि में आर्य महिलाओं के आभूषण भी शामिल थे। आज देखने में ८ सहस्र की रकम छोटी दिखाई देती है परन्तु उस समय की दशा बहुत भिन्न थी। रुपया आप से महंगा था, सार्वजिनिक कार्यों के लिए दान देने की आदत लोगों को नहीं पड़ी थी, और आर्यसमाज में धनी पुरुषों का अभाव था। लाहौर के मुट्ठीभर आर्यपुरुषों में से कोई भी उस समय लखपति कहाने के योग्य नहीं था। उस समय के 8 हजार आज के 80 हजार के बराबर थे। 1886 में हमें समाचार पत्रों में पढ़ते हुए विदित होता है कि कॉलेज के लिए ८0 हजार रुपया इकट्ठा हो गया है।

पंजाब में आर्यसमाजों के उत्सवों पर डी.ए.वी. कॉलेज के लिए ही अपीलें होती थीं। अपील करने का काम पं. गुरुदत्त एम.ए. और लाला लाजपतराय के जिम्मे था। पं. गुरुदत्त की योग्यता और धारा प्रवाह भाषण–शक्ति जनता पर अद्भुत असर रखती थी। लाला लाजपतराय की ओजस्वी वाणी प्रारम्भ से ही सत्कार पा रही थी। कभी–कभी ट्रिब्यून के सम्पादक मि.मजूमदार भी डी.ए.वी. कॉलेज के लिए अपील किया करते थे। साधु रमताराम पंजाब के एक उत्साही कार्यकर्त्ता थे। बोलने में तेज, कार्य में अनथक, स्वभाव में अक्खड़, लगन के सच्चे साधु रमताराम ने डी.ए.वी. कॉलेज के लिए कुछ सालों तक खूब काम किया। लाहौर में आटा फण्ड चलाने का श्रेय साधु जी को ही था।

उस समय जिन दानियों ने पुष्कल राशियाँ देकर संस्था के संचालकों के उत्साह को बढ़ाया, उनमें से दो के नाम विशेषतया स्मरणीय हैं। म्यानी के ठेकेदार मलिक ज्वालाप्रसाद जी ने ८000) का इकट्ठा दान किया। मलिक जी की आर्यसमाज के लिए दान की यह पहली किश्त थी। अगली किश्तें बराबर आती रहीं। सन् 1891 ई. के आर्यसमाज लाहौर के वार्षिकोत्सव पर आपने दो मौरुसी चाहात, दो मौरूसी मकानात, औरतों के कुल जेवरात और बाकी कुल जायदाद के चौथे हिस्से की वसीयत एंग्लों वैदिक कॉलेज के नाम कर दी थी। इसके अतिरिक्त और भी बहुत–सी रकमें समय–समय पर आपसे आर्यसमाज को प्राप्त होती रहीं। डी.ए.वी. कॉलेज के लिए दूसरी बड़ी रकम भैरोंवाल के रईस बाबा नारायणसिंह से प्राप्त हुई थी। आपने अमृतसर में डी.ए.वी. स्कूल खोलने के लिए १० हजार रुपए नकद और ५० हजार रुपए की कीमत के गांव दान में दे दिये थे, जो पीछे से उनके पोते ने नालिश करके वापस ले लिये थे।

आर्यसमाज में मध्यम श्रेणी के लोगों की अधिकता उस समय भी थी और अब भी है। बड़े-बड़े दान उत्साह को बढ़ाने के साधन होते हैं। परन्तु खजाना छोटी-छोटी राशियों से ही भरता था। कई आर्यसमाजें निश्चित मासिक चन्दा देती थीं। मुल्तान आर्यसमाज से ३०) मासिक, लुधियाना आर्यसमाज से २१) मासिक, गुजरानवाला आर्यसमाज से १५) मासिक के लगभग सहायता प्राप्त होती थी। अपनी थोड़ी-सी आय का जितना अधिक भाग आर्यसमाजी लोग दान में देते हैं, अनुपात से शायद उतना दान दूसरे किसी समाज के लोग नहीं देते। सारांश यह है कि डी.ए.वी. कॉलेज, पंजाब के आर्यपुरुषों के लिए एक लाड़ला उद्देश्य हो गया । पं. गुरुदत्त जी की महत्वपूर्ण सहायता, लाला लाजपतराय जी की तेजस्विनी वाणी, और लाला हंसराज जी की जीवनाहुति ने पंजाब की शिक्षित मण्डली को कॉलेज के पीछे पागल बना दिया।

५. महात्मा हंसराज

जिस व्यक्ति के स्वार्थ-त्याग ने डी.ए.वी. कॉलेज के संचालाकें के उत्साह को कई गुना कर दिया, उसका जन्म होशियारपुर जिले के बजवाड़ा कस्बे में हुआ था। आपके पिता का नाम चुन्नीलाल था। जिस समय उनका देहान्त हुआ, हंसराज जी के बड़े भाई लाला मलकराज भल्ला ने लाहौर में आकर रेलवे में नौकरी कर ली और हंसराज जी पढ़ने लगे। परिश्रम और बुद्धि ने अपने फल दिखाये। आप अच्छे विद्यार्थियों में समझे जाने लगे। बालकावस्था से ही आपके हृदय में धर्मप्रीति उत्पन्न होने लगी थी। आपके स्कूल के हेडमास्टर ईसाई थे। एक दिन वे भारतवर्ष का प्रामाणिक इतिहास पढ़ाते-पढ़ाते कहने लगे कि प्राचीन आर्यलोग पत्थरों और वृक्षों की पूजा किया करते थे। आपने इस निर्मूल स्थापना का विरोध किया। विवाद यहाँ तक बढ़ा कि आपको दो दिन के लिए स्कूल छोड़ना पड़ा।

1880 ई. में हंसराज ने ऐन्ट्रेन्स की परीक्षा और 1885 में बी.ए. परीक्षा पास की। परीक्षा के उत्तीर्ण विद्यार्थियों में आपका नम्बर दूसरा रहा। विद्यार्थी काल में ही आप आर्यसमाज के सत्संग में आने लगे थे उन दिनों आर्यसमाज लाहौर में एक दृढ़ आत्मा का निवास था। वह एक सुगन्धित फूल था जिससे संसर्ग होते ही सुगन्ध पैदा हो जाती थी। आर्यसमाज के प्रधान लाला साईंदास जी थे। नवयुवक हंसराज जी की हृदय भूमि को हल से खूब नर्म और तैयार कर दिया तो एक-दूसरे महापुरुष ने उसमें धर्म का बीज बोया। कॉलेज में प्रविष्ट हो जाने पर लाला हंसराजजी पं. गुरुदत्त जी के संसर्ग में आये। आप पं. जी के गहरे मित्रों और सहयोगियों में से थे।

1885 ई. में आप बड़ी सफलता के साथ बी.ए. परीक्षा में उत्तीर्ण हुए। उधर पंजाब की आर्यसमाजों में डी.ए.वी. कॉलेज के लिए उत्साह उमड़ रहा था। जोश था, धन था, इच्छा थी, परन्तु नई संस्था के लिए किसी योग्य हेडमास्टर के न मिलने से सम्पूर्ण आन्दोलन निराशामय-सा प्रतीत होता था। उस समय लाला हंसराहज जी ने अपने आपको सेवा के लिए पेश किया। आपने बिना कुछ वेतन लिए डी.ए.वी. स्कूल में कार्य करने की इच्छा प्रकट की। अन्धे को आंखें मिलीं। डी.ए.वी. कॉलेज कमेटी का उत्साह दुगना हो गया

और प्रान्तभर में एक जोश की लहर चल निकली। आर्यसमाज की उस समय की परिभाषा में लाला हंसराज जी की उस कुर्बानी ने डी.ए.वी. कॉलेज को मुमकिन बना दिया।

६. डी.ए.वी. स्कूल की स्थापना

लम्बा परिश्रम अन्त को फलीभूत हुआ। 1 जून 1886 के दिन आर्यसमाज मन्दिर लाहौर में एक सार्वजनिक सभा हुई। विचार तो यह था कि स्कूल की स्थापना धूमधाम से की जाये , परन्तु जून के महीने को लोगों के एकत्र होने के लिए उचित न समझा गया। बड़े उत्सव को किसी दूसरे समय के लिए मुल्तवी करके ''स्वल्पारम्भ'' पर ही सन्तोष किया गया। पं. गुरुदत्त विद्यार्थी एम.ए. ने एक प्रभावशाली व्याख्यान में डी.ए.वी. कॉलेज के उद्देश्यों का वर्णन किया। अगले दिन आर्यसमाज मन्दिर में ही लड़कों की भर्ती आरम्भ हो गई। जून मा में भर्ती होने से विद्यार्थियो से कोई प्रवेश की फीस नहीं ली गई। प्रारम्भ में स्कूल का निम्नलिखित अध्यापक वर्ग नियत किया गया।

लाला हंसराज बी.ए., हेडमास्टर
लाला दुर्गादास, सैकेंड मास्टर
भाई सोहनसिंह, साइंस के अध्यापक
लाला देवी दयाल, गणित अध्यापक
पं. श्रीकृष्ण शास्त्री, प्रथम संस्कृताध्यापक
पं. मनीराम विशारद, द्वितीय संस्कृताध्यापक
पं. मुनिराम विशारद, प्रथम हिन्दी शिक्षक
पं. मूलराज, द्वितीय हिन्दी शिक्षक
पं. हरनामदास, प्रथम उर्दू शिक्षक
लाला प्यारेलाल द्वितीय उर्दू शिक्षक
लाला फग्गू राम

इस प्रकार 11 अध्यापकों की मण्डली ने ऋषि के स्मारक की नींव डाली। प्रारम्भ से ही यह स्कूल सर्वसाधारण का प्यारा बन गया। पहले ही सप्ताह में 350 बालक भर्ती हो गए। दूसरे सप्ताह के अन्त में छात्रों की संख्या 500 तक पहुँच गई। जून का महीना समाप्त होते-होते स्कूल में 600 छात्र पढ़ने लगे। पहले क्षण से ही डी.ए.वी. स्कूल ने विद्यार्थियों में जो प्रियता प्राप्त की, वह बढ़ती गई, यहाँ के कि किसी दिन लाहौर में संख्या में सबसे बड़ा स्कूल डी.ए.वी. स्कूल और संख्या में सबसे बड़ा कॉलेज डी.ए.वी. कॉलेज हो गया।

७.उन्नति और दृढता

डी.ए.वी. स्कूल की स्थापना के पीछे उसकी प्रसिद्धि बढ़ती गई। संचालकों ने स्थिरता उत्पन्न करने में भी कोई कसर न उठा रखी। 27 अगस्त 1886 को दयानन्द एंग्लो वैदिक कॉलेज सोसाइटी की

रजिस्ट्री करा दी। रजिस्ट्री के समय सोसाइटी के दो उद्देश्य बतलाये गए थे:—

पंजाब में दयानन्द ऐंग्लो-वैदिक स्कूल, कॉलेज तथा आश्रम की स्थापना।

शिल्प की शिक्षा का प्रबन्ध करना।

शिक्षा की निम्नलिखित विशेषताएं उद्घोषित की गई थीं:—

हिन्दू साहित्य, प्राचीन संस्कृत साहित्य और अंग्रेजी भाषा तथा पाश्चात्य विज्ञान के शिक्षण पर बल देना।

रजिस्टर्ड होते समय सोसाइटी के मुख्य-मुख्य सभासद् निम्नलिखित थे:—

लाला लालचन्द्र, एम.ए., प्लीडर, चीफकोर्ट, प्रधान

लाला ईश्वरदास एम.ए., प्लीडर, रावलपिण्डी, प्रधान

मलिक ज्वाला सहाय, ठेकेदार

लाला मदनसिंह बी.ए., मन्त्री

लाला साईंदास, प्रधान आर्यसमाज, लाहौर सभासद्

लाला काशीराम प्लीडर

पं. गुरुदत्त एम.ए.

राय मूलराज, एम.ए.

लाला गंगाराम सिविल इंजीनियर

लाला द्वारिकादास, एम.ए., प्रिन्सिपल महेन्द्र कॉलेज, पटियाला इत्यादि।

आश्रम बनाने का निश्चय पहले ही हो चुका था। मैमोरेण्डम में भी आश्रम की चर्चा थी। आश्रम के नियम 1886 में ही प्रकाशित कर दिये थे। नियमों की विशेषता यह थी कि आश्रम में रहते हुए कोई बालक विवाह नहीं करा सकता। 20 वर्ष से ऊंची उमर का युवक आश्रम में नहीं आ सकता था। नियम प्रकाशित हो गए, और उन पर विचार होता रहा। स्कूल के समीप ही लाला रतनचन्द्र दूगल का मकान किराये पर ले लिया गया। मा. दुर्गाप्रसाद जी आश्रम के अध्यक्ष बनाये गए। प्रारम्भ में तो थोड़े ही बोर्डर भर्ती हुए, परन्तु शीघ्र ही इतने प्रार्थनापत्र आ गए कि अधिकांश को अस्वीकृत करना पड़ा।

आर्यसमाज सुजानगढ़

आर्यसमाज सुजानगढ़ के चुनाव सर्वसम्मति से सम्पन्न हुए जिसमें पदाधिकारी चुने गए:-

प्रधान:— श्री जगदीश प्रसाद तँवर

मन्त्री:— श्री रविन्द्र जी आर्य

कोषाध्यक्ष:— श्री मदनगोपाल जी सोनी

नई कार्यकारिणी द्वारा श्रावणी उपाकर्म का कार्यक्रम 25 व 26 अगस्त को सात कुण्डीय यज्ञ सम्पन्न करवाया गया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास, जोधपुर के निर्वाचन सम्पन्न

पूर्व सूचनानुसार महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास, जोधपुर की आम सभा की बैठक प्रधान श्री सुरेशचन्द्र जी आर्य की अध्यक्षता में न्यास भवन के प्रदर्शनी कक्ष द्वितीय तल में ईश्वरस्तुति के साथ कोरम पूर्ति उपरान्त प्रारम्भ हुई।

बैठक में प्रधान जी की अनुमति से निवर्तमान मन्त्री किशनलाल गहलोत ने दिनॉक 30.09.2015 से अब तक कार्यकारिणी द्वारा लिये गये निर्णयों का विवरण पुष्टि हेतु रखा। समस्त निर्णयों की पुष्टि सर्वसम्मति से की गई। उपस्थित सदस्यों द्वारा मांगी गई जानकारी उपलब्ध कराई गई तथा शंकाओं का समाधान किया गया।

निर्वतमान मन्त्री किशनलाल गहलोत ने न्यास द्वारा गत तीन वर्षों में किये गये कार्यविवरण की प्रस्तुति की। गत तीन वर्षों में निम्न महत्वपूर्ण कार्य न्यास द्वारा सम्पन्न किए गए:–

1. सत्संग भवन का निर्माण एवं लोकार्पण
2. अतिथिशाला का निर्माण एवं लोकार्पण
3. आर्य वीर एवं वीरांगना शिविरों का आयोजन
4. श्रावणी पर्व का आयोजन
5. विभिन्न वैदिक पर्वों का आयोजन
6. राष्ट्रिय वेदसंगोष्ठी का आयोजन
7. आर्य महाबली भीम व्यायामशाला का निर्माण व लोकार्पण
8. स्वामी सेवानन्द साधना कक्ष का निर्माण

निवर्तमान कोशाध्यक्ष प्रस्तुत आय–व्यय एवं उसके लेखों की सर्वसम्मति से पुष्टि इस सभा द्वारा की गयी।

पश्चात् न्यास के त्रैवार्षिक निर्वाचन की कार्यवाही चुनाव अधिकारी श्री देवेन्द्र कुमार सोनी, सेवानिवृत्त उप रजिस्ट्रार, राजस्थान उच्च न्यायालय, जोधपुर द्वारा प्रारम्भ की गयी।

न्यास के आजीवन न्यासी स्व. श्री डॉ0 भवानीलाल जी भारतीय के निधन से रिक्त स्थान पर आर्य श्री किशनलाल श्री गहलोत को आजीवन सदस्य बनाया गया।

न्यास के विधानानुसार प्रधान पद पर सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र जी आर्य एवं विधान अनुसार आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री विजयसिंह भाटी को न्यास के उपप्रधान पद पर पदासीन होने की घोषणा की गई। दोनों पदों लिये करतल ध्वनि से स्वागत किया गया ।

सभा ने श्री विजयसिंह भाटी को कार्यकारी प्रधान, आर्य श्री किशनलाल गहलोत को मंत्री, श्री यशपाल आर्य को उपमंत्री एवं श्री जयसिंह आर्य को कोषाध्यक्ष पद पर निर्वाचित किया।

निर्वाचन अधिकारी ने न्यास के विधान अनुसार कार्यकारिणी के शेष सदस्यों के निर्वाचन हेतु सभा से अनुरोध किया। उपस्थित सदस्यों ने सर्वसम्मति से कार्यकारिणी हेतु निम्न सदस्यों का निर्वाचन किया:–

1 श्री दुर्गादास जी वैदिक
2 श्री रामेश्वर जी जसमतिया
3 श्री कमलकिशोर आर्य
4 श्री सेवाराम जी आर्य
5 श्री विमल जी शास्त्री
6 श्री रामनारायण जी शास्त्री
7 श्रीमती ज्योति जी सोलंकी
8 श्री ओप्रकाश जी आसेरी
9 श्री हरेन्द्र जी गुप्ता
10 श्री विक्रम सिंह जी साँखला
11 श्रीमती चन्द्रा जी जसमतिया
12 श्रीमती चन्द्राकान्ता जी भाटी
13 श्री प्रेमसिंह जी
14 श्री सोमेन्द्र जी
15 श्री हेमसिंह जी

न्यास के भावी प्रकल्पों पर विचारोपरान्त आर्य किशनलाल गहलोत ने सभी सदस्यों से सहयोग की अपेक्षा की।

अन्त में प्रधान श्री सुरेशचन्द्र जी आर्य ने सभी का धन्यवाद देते हुए न्यास के कार्य को आगे बढाने का आव्हान किया और महर्षि के स्वप्नों की पूर्ति के लिये संकल्पित होने को कहा। उन्होंने गत तीन वर्षों में न्यास द्वारा किये गये कार्यों हेतु साधुवाद दिया। श्री आर्य ने अन्तराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में दल बल सहित सम्मिलित होने हेतु आमन्त्रित किया। अन्त में प्रधानजी ने निर्वाचित सदस्यों को बधाई दी गयी। शान्तिपाठ के साथ सभा सम्पन्न हुई।

न्यास द्वारा विद्यालयों में वैदिक धर्म का प्रचार

महर्षि दयानंद सरस्वती स्मृति भवन न्यास जोधपुर द्वारा जोधपुर की विद्यालयों में वैदिक धर्म के प्रचार एवं प्रसार हेतु कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। इस कार्यक्रम में पाठशाला के विद्यार्थियों को वैदिक जानकारी से परिपूर्ण पुस्तकें वितरित करके उन पर आधारित परीक्षा ली जाती है। परीक्षा में विशेष स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्त किया जाता है। इस कार्यक्रम में श्री मदन लाल जी तँवर का विशेष योगदान रहता है। श्री विक्रम सिंह जी सांखला, श्री कैलाश चंद्र जी आर्य, श्री सेवाराम जी जांगिड़, श्री रामस्वरूप जी आर्य, श्री हेमसिंह जी दाता, श्री जयसिंह जी पालड़ी, श्री नरपतसिंह जी भाबा, आर्य किशनलाल जी गहलोत, श्री सोमेन्द्र जी आर्य, आदि भी इस कार्यक्रम में अपना अमूल्य योगदान देते हैं। गत दिनों श्री जेबीएम सेकेंडरी स्कूल, ग्लोबल इंडियन इंटरनेशनल स्कूल, श्री सुमेर लिटिल रोज स्कूल, लॉर्ड सत्यम चिल्ड्रन अकादमी सीनियर सेकेंडरी स्कूल, श्री सरस्वती बाल वीणा भारती सीनियर सेकेंडरी स्कूल, संध्या शिक्षा सदन माध्यमिक विद्यालय, श्री महाराणा प्रताप उच्च माध्यमिक विद्यालय सेतरावा, श्री वरुण विद्या निकेतन, मां भारती विद्या मंदिर उच्च माध्यमिक विद्यालय, वरुण विद्या मंदिर आदि विद्यालयों में यह प्रचार करते हुए विशिष्ट स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्त किया गया।

आर्य समाज सूरसागर जोधपुर का वार्षिक उत्सव

आर्य समाज सूरसागर जोधपुर का वार्षिक उत्सव दिनांक २७ दिसंबर से ३० दिसंबर २०१८ तक आयोजित किया जाएगा। उत्सव का विशेष आकर्षण वेदों के प्रकाण्ड विद्वान आचार्य सत्यानंद जी वेदवागीश जी के साथ साथ आचार्य सोमदेव जी, डॉक्टर राम नारायण जी शास्त्री एवं भजनोंपदेशिका संगीता जी हरियाणा का कार्यक्रम रहेगा। आर्य जगत को जोधपुर में अनेक कर्मठ कार्यकर्ता और अधिकारी प्रदान करने वाले सूरसागर आर्य समाज के इस चार दिवसीय प्रातः एवं सायकालीन कार्यक्रमों में आप सभी सादर आमंत्रित है।

शारदीयनवसस्येष्टि पर्व एवं महर्षि दयानंद बलिदान दिवस

महर्षि दयानंद सरस्वती स्मृती भवन न्यास के तत्वावधान में जोधपुर की समस्त आर्यसमाजों ने शारदीय नवसस्येष्टि पर्व एंवं महर्षि दयानंद बलिदान दिवस स्मृति भवन की भव्य शाला में उत्साह एवं आनंद से मनाया।

इस अवसर पर प्रकांड विद्वान आचार्य सत्यानंद जी वेदवागीश के ब्रह्मत्व में आयोजित विशेष यज्ञ में सभी आर्य पुरुषों एवं माताओं ने आहुति प्रदान की। माता शांति देवी जी, श्री विक्रम सिंह जी, श्री प्रवीण जी आर्य आदि ने सुंदर भजन प्रस्तुत किए। आचार्य सत्यानंद जी वेदवागीश ने शारदीय नवसस्येष्टि के महत्व पर प्रकाश डालते हुए महर्षि दयानंद सरस्वती के व्यक्तित्व एवं तित्व पर प्रेरक दृष्टान्त सुनाए और आर्यों से पुरुषार्थी बनने का आह्वान किया। इस पत्रिका के संपादक का जन्मदिवस भी होने के कारण आचार्य श्री सत्यानंद जी वेदवागीशजी के साथ साथ न्यास एवं जोधपुर के समस्त आर्य समाज के सभी उपस्थित अधिकारीगण एवं सदस्यों ने आशीर्वाद एवं शुभकामनाएं प्रदान की।

महर्षि दयानंद गौशाला में गोपाष्टमी का आयोजन

आर्य समाज जोधपुर रातानाडा द्वारा संचालित महर्षि दयानंद गौशाला, मंडोर में गोपाष्टमी का पर्व श्रद्धा एवं उत्साह के साथ मनाया गया इस गौशाला के प्रबंधक श्री दुर्गा दास जी वैदिक के संयोजन में आयोजित इस पर्व में विशेष बात आचार्य वेदप्रियजी शास्त्री एवं भजन उपदेशक श्री केशव देव जी शिवगंज की उपस्थिति रही। इस अवसर पर आचार्य श्री के ब्रह्मत्व में विशेष यज्ञ किया गया। यज्ञोपरांत आयोजित सत्संग में शिवगंज से पधारे भजनोपदेशक श्री केशव देव जी ने गौमहिमा और गो पर करुणा का आह्वान करते हुए प्रेरक भजन एवं गीत सुनाकर श्रोताओं को भाव विभोर कर दिया। अपने व्याख्यान में आचार्य श्री वेदप्रियजी शास्त्री ने गौ की महिमा बताते हुए, इसके आर्थिक महत्व को भी बताते हुए, मनुष्यों पर इसके द्वारा किए जाने वाले उपकारों को रेखांकित करते हुए, मनुष्यों से कृतज्ञ बनकर गौ रक्षा एवं गौ सेवा का उपदेश दिया। इस अवसर पर गौशाला में अथक सेवा करने वाले गोपालों को पुरस्त कर उनका उत्साहवर्धन किया गया। इस कार्यक्रम में जोधपुर की आर्य समाज ओके हरिजनों ने बढ़–चढ़कर हिस्सेदारी की सहभागिता की। कार्यक्रम में भारी मात्रा में गौप्रेमी उपस्थित थे, जिन्होंने इस अवसर पर भरसक दान दिया। कार्यक्रम के संयोजक एवं गौशाला के प्रबंधक श्री दुर्गादास वैदिक नें सब का धन्यवाद ज्ञापित किया।

आचार्य श्री वेद प्रिय जी शास्त्री का जोधपुर प्रवास

आर्य समाज जोधपुर रातानाडा द्वारा संचालित महर्षि दयानंद गौशाला में गोपाष्टमी के उत्सव पर जोधपुर पधारे श्री वेदप्रिय जी शास्त्री ने आगामी २ दिनों तक और भी अपने वचनामृत से आर्य जनों को लाभान्वित किया शनिवार १७ नवंबर को महर्षि दयानंद सरस्वती स्मृति भवन न्यास द्वारा आयोजित साप्ताहिक सत्संग में भी आप उपस्थित रहे। अपने व्याख्यान में उन्होंने महर्षि दयानंद के मिशन को और आर्य समाज की स्थापना के उद्देश्य को समझाते हुए आर्य जनों को मार्गदर्शन प्रदान करते हुए कहा कि प्रत्येक आर्य को तन मन धन से मनुष्य मात्र की सेवा में

जुट जाना चाहिए।

रविवार १८ नवंबर को नगर आर्य समाज गुलाब सागर जोधपुर की साप्ताहिक सत्संग में आपने अपने व्याख्यान में समाज की तुलना मनुष्य शरीर से करते हुए सिर को ब्राह्मण, भुजाओं को क्षत्रिय, उदर को वैश्य और पैरों को शूद्र बताते हुए कहा कि जैसे शरीर में प्रत्येक अंग का अपना महत्व है, वैसे ही समाज में प्रत्येक वर्ण का महत्व है जो किसी भी अन्य वर्ण से कम नहीं है। आचार्य जी ने मनुष्य को सामाजिक प्राणी बताते हुए कहा कि जो मनुष्य समाज से अलग–थलग या पृथक्त होकर रहता है वह उसी प्रकार निरर्थक हो कर नष्ट हो जाता है, जैसे यज्ञ कुंड से पृथक्त कोई समिधा या किसी मशीन से निकला कोई छोटा सा पुर्जा। यज्ञ कुंड से निकली समिधा शीघ्र ही कोयला बन जाती है और मशीन से निकला पुर्जा निरर्थक और कबाड़ हो जाता है। इसीलिए मनुष्य को सामाजिक होना ही चाहिए। आर्यसमाज के मिशन को समझाते हुए आचार्य जी ने कहा कि महर्षि दयानंद के विचार संकीर्ण नहीं, परंतु वैश्विक व्यापकता को लिए हुए थे। इसीलिए उन्होंने किसी छोटे से समूह जाति, समाज या देश के कल्याण को लक्ष्य ना बनाते हुए आर्यसमाज के छठे नियम में संसार का उपकार करना ही मुख्य उद्देश्य बनाया, जिसके अनुसार आर्यों को हृदय में और मनो–मस्तिष्क में विराटता को धारण कर आर्य समाज को सुंढ़ करने का प्रयास करना चाहिए। आर्यसमाज में से आर्य शब्द की व्याख्या करते हुए आचार्य जी ने इसे महर्षि द्वारा स्वमंतव्यामंतव्यप्रकाश में दी गई मनुष्य की परिभाषा से जोड़ते हुए और इसकी व्याकरणपरक व्याख्या करते हुए आर्य को श्रेष्ठ बताया एवं समाज उस संस्था को बताया जिसमें मनुष्य मात्र की आवश्यकता की पूर्ति हो। इसका प्रयास महर्षि दयानंद ने और दयानंद के बाद की पीढ़ियों ने अनाथ आश्रम, वनिता आश्रम, विद्यालय, गुरुकुल, औषधालय आदि खुलवाए कर किए थे। आचार्य श्री ने छठे नयम में उन्नति की व्याख्या को रेखांकित करते हुए कहा कि आर्य समाज आज भी शारीरिक उन्नति तो कर रहा है किंतु आत्मिक उन्नति की ओर ध्यान ही नहीं दे रहा इसीलिए सामाजिक उन्नति को प्राप्त करने में असफल रहा है। इसलिए आर्यसमाजियों को आत्मिक उन्नति पर अधिक ध्यान देना चाहिए जिससे कि वे योग्य पुरुषार्थी और सेवाभावी बनके आर्य समाज के मूल उद्देश्य को प्राप्त करने की दिशा में बढ़ सके।

आर्यसमाज शास्त्री नगर में सामूहिक विवाह

रावणा राजपूत समाज ऑर्गेनाइजेशन एवं श्री अखिल रावणा राजपूत सेवा संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में सामूहिक विवाह समारोह गत १६ नवंबर २०१८ को आयोजित किया गया। आर्यसमाज शास्त्री नगर की देखरेख में आयोजित यह जोधपुर शहर का एक बड़ा सामूहिक विवाह रहा, जहाँ सभी विवाह संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से संपन्न कराए गए। समाज के मन्त्री ने बताया कि आर्यसमाज शास्त्री नगर के प्रांगण में आयोजित इस समारोह में कुल १६ जोड़ों का विवाह संस्कार संपन्न कराया गया। महर्षि दयानंद सरस्वती स्मृति भवन न्यास एवं आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री विजय सिंह भाटी के मार्गदर्शन में जोधपुर के विभिन्न आर्यसमाजों के पुरोहित एवं सदस्यों ने सहयोग प्रदान करते हुए सामूहिक विवाह संस्कार सफलतापूर्वक संपन्न कराया।

स्वामी वेदात्मवेशजी का जोधपुर प्रवास

स्वामी वेदात्मवेशजी महाराज जोधपुर प्रवास पर महाराष्ट्र से पधारे। आप राजस्थान के चुनाव में आर्य सामाजिक परिवेश की एक प्रत्याशी के चुनाव प्रचार कार्यक्रम के साथ साथ ऋषि मिशन के प्रचार हेतु जोधपुर पधारे। स्वामी जी महाराज ने महर्षि दयानंद सरस्वती स्मृति भवन न्यास की दैनिक सत्संग एवं शनिवार की साप्ताहिक सत्संग के साथ साथ विशेष सत्संग में भी ज्ञान गंगा प्रवाहित की।

रविवार २ दिसंबर को नगर आर्य समाज गुलाब सागर जोधपुर के रविवारीय सप्ताहिक सत्संग में अपने व्याख्यान में स्वामी जी महाराज ने महर्षि के व्यक्तित्व तित्व एवं सिद्धांतों की चर्चा करते हुए महर्षि के समकालीन इतिहास और समकालीन व्यक्तियों को उद्धृत करते हुए कहा कि जिन लोगों ने महर्षि दयानंद से विचार लिए, वे सार्वजनिक और राजनैतिक जीवन में कहीं के कहीं पहुंच गए, किंतु महर्षि को वह स्थान नहीं मिला जिसके वे हकदार थे।

स्वामी जी महाराज ने ऋषि की पवित्र और व्यापक दृष्टि को छठे नियम के माध्यम से बताया और कहा कि हमने सामाजिक उन्नति के बहुत प्रयास कर लिए। शारीरिक उन्नति बहुत की। आर्य वीर दल के माध्यम से भी और व्यायाम शालाओं के माध्यम से भी; योग के प्रचार के माध्यम से भी और अन्य भारतीय व्यायाम कलाओं के माध्यम से भी। किंतु आर्यसमाजियों ने आत्मिक उन्नति पर ध्यान कम दिया। यह बात सही है कि आर्यसमाज की स्थापना से ही भारत के परतंत्र होने और आर्यसमाज के स्वाधीनता संग्राम में लगे होने के कारण आर्यसमाज को बहुत संघर्ष करना पड़ा और संघर्ष के उस काल में आत्मिक उन्नति बहुत कम आर्यसमाजी कर पाए। लेकिन महर्षि सहित जिन्होंने उस विषम काल में भी आत्मिक उन्नति की, उसका प्रभाव उनसे संपर्क में आने वाले महापुरुषों पर भी पड़ा और उनके श्रोताओं और पाठकों पर भी पड़ा। बिना आत्मिक उन्नति के हम प्रभावी नहीं बन सकते। अब जबकि आर्य समाज के सामने इतनी विषम परिस्थितियां नहीं है, तो उन्हें आत्मिक उन्नति के मार्ग को अपनाना चाहिए, ताकि प्रत्येक आर्यसमाजी प्रेरक बन सके, प्रभावी बन सकें और ऋषि के सपनों को साकार करने के कार्य को गति मिल सक।

५ दिसंबर को स्वामी जी महाराज ने महर्षि दयानंद सरस्वती स्मृति न्यास में विशेष सत्संग में व्याख्यान करते हुए प्रेरक प्रसंगों के माध्यम से स्वाधीनता आंदोलन में आर्य समाज के योगदान को रेखांकित किया और साथ ही स्वतंत्रता के बाद शासन में आर्यों की हिस्सेदारी में कमी और देशद्रोहियों के हाथ में ७० वर्षों तक शासन रहने को दुर्भाग्यपूर्ण बताया, जिसके लिए आर्यसमाज भी जिम्मेदार है। स्वामी जी महाराज ने वेद के उद्धरण से बताया कि जब परमात्मा ने यह भूमि आर्यों को दी है तो आर्य लोग त्याग के नाम पर शासन से दूर कैसे रह सकते हैं?आर्य लोग शासन से भी दूर रहे और आत्मिक उन्नति से भी दूर रहे। उनके सामने कोई विशेष चुनौती भी नहीं रह गई, इसलिए वे शान्त होते होते अकर्मण्य हो गए। इस अकर्मण्यता को दूर करने की अत्यधिक आवश्यकता है जो केवल आत्मिक उन्नति से ही संभव है। क्योंकि आत्मिक उन्नति से ज्ञान की प्राप्ति होती है, निर्भयता आती है, ईश विश्वास होता है और पुरुषार्थ प्राप्त होता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास एवं आर्यप्रतिनिधि सभा, राजस्थान के प्रधान श्री विजयसिंहजी भाटी के नेतृत्व में १९ नवम्बरको आर्यसमाज शास्त्रीनगर में रावणा राजपूत समाज के १९ जोड़ों के सामूहिक विवाह की झलक

स्वामी वेदात्मवेशजी महाराज के जोधपुर प्रवास पर नगर आर्यसमाज गुलाबसागर में 2 दिसम्बर एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन में 5 दिसम्बर को आयोजित कार्यक्रम की झलकियाँ

Postal Reg. Jodhpur/ 434/2018-20

Date of Posting 9,10-12-2018
Date of Print 5-12-2018

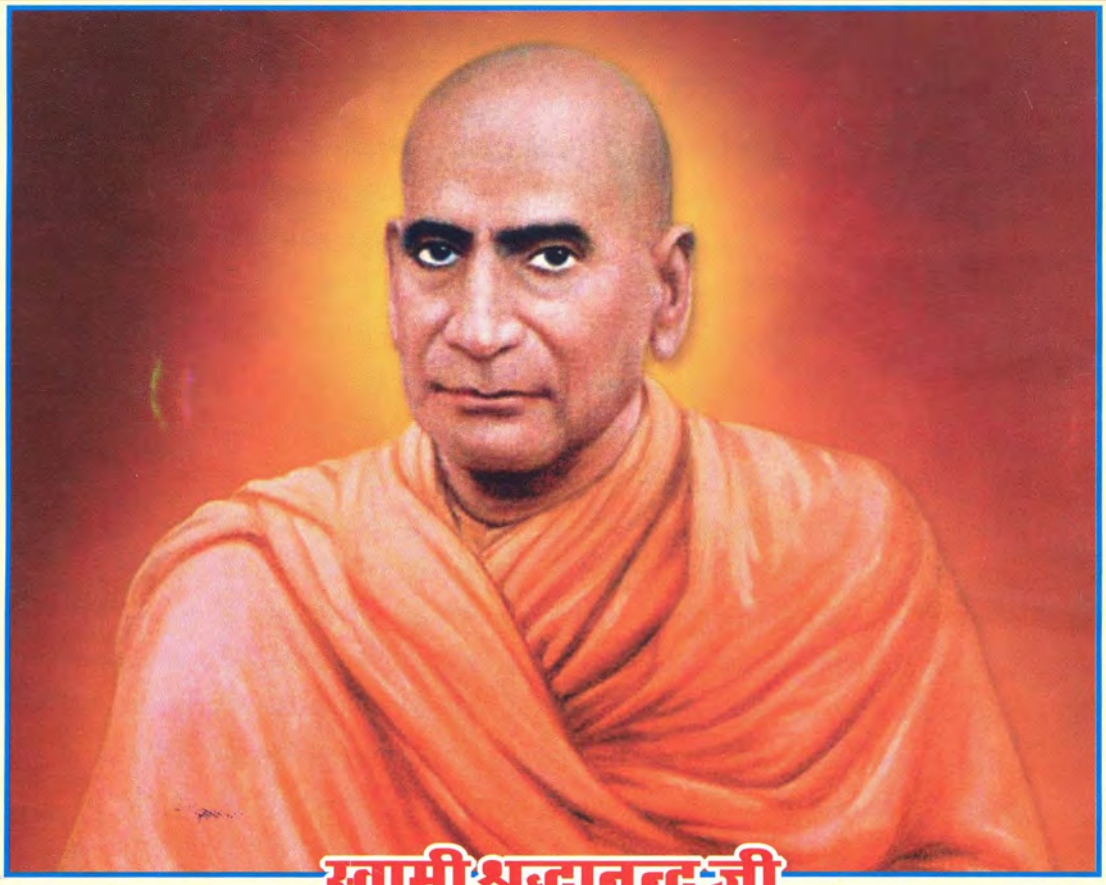

स्वामी श्रद्धानन्द जी

गुरुकुल प्रणाली के प्राणदाता,
देशभक्त, स्वतन्त्रता सेनापति
सर्वस्व दानी अमर शहीद

सत्वाधिकारी महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास के लिए प्रकाशक व मुद्रक विजयसिंह भाटी द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास, 0291-2516655 महर्षि दयानन्द मार्ग, मोहनपुरा पुलिया के पास जोधपुर (राज.) से प्रकाशित एवं सैनिक प्रिण्टर्स, मकराणा मौहल्ला केरू हाऊस जोधपुर फोन नं. 9829392411 से मुद्रित।

सम्पादक फोन नं. 9460649055

Book-Post